सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivahan_Vishesh
YouTube

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

# परिवहन विशेष

वर्ष 02, अंक 13, नई दिल्ली । मंगलवार, 26 मार्च 2024, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

**आज का सुविचार**

अपने मिशन में सफल होने के लिए आपको अपने लक्ष्य के प्रति एक चित भाव से समर्पित होना पड़ेगा।

03 'केजरीवाल की विचारधारा को कैसे जेल में डालेंगे'...
06 देश के लिए हंसते-हंसते चूम लिया फांसी को
08 अरविंद केजरीवाल की गिरफ्तारी पर मनोज तिवारी का तंज

## दिल्ली के व्यवसायिक वाहन मालिक हो रहे परेशान पर आला अधिकारी नही कर रहे कोई हल, आखिर क्यों ?

**दिल्ली में सार्वजनिक सवारी सेवा में समर्पित अधिकतर सभी श्रेणियों में कार्यरत वाहन मालिक बर्बादी के कगार पर पहुंच गए हैं और उसका नुकसान उठा रही हैं दिल्ली की जनता।**

संजय बाटला

**नई दिल्ली।** दिल्ली परिवहन विभाग द्वारा पिछले कुछ सालों से जारी की गई नीतियों के कारण परिवहन व्यवसायिक क्षेत्र में जुडे व्यवसायियों की परेशानियां दिन प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही है और सभी व्यवसायिक वाहन मालिकों और चालकों के लिए कार्यरत संस्थाएं, एसोसिएशन, यूनियन, ट्रस्ट और समाज सेवक बैठकों और लिखित मेमोरेंडम के माध्यम से हल निकलवाने की लिए प्रयास कर रहे हैं पर परिवहन विभाग कोई भी हल निकालने को तैयार ही नहीं, आखिर क्यों, बड़ा सवाल ?

दिल्ली में सार्वजनिक सवारी सेवा में समर्पित अधिकतर सभी श्रेणियों में कार्यरत वाहन मालिक बर्बादी के कगार पर पहुंच गए हैं और उसका नुकसान उठा रही हैं दिल्ली की जनता। आप जानते ही होंगे की दिल्ली में सार्वजनिक सवारी सेवा में डीटीसी, मेट्रो बस सेवा, आरटीवी बस सेवा, ग्रामीण सेवा, फटफट सेवा, मैक्सी कैब बस सेवा आटो ओर टैक्सी सेवा जनता के लिए उपल्ब्ध थी लेकिन सरकार और विभाग की नीतियों और कोरोना वायरस के आगमन से आटो सेवा को छोड़कर अन्य सभी सेवाए दिल्ली की सड़को से लुप्त होती जा रही है, पर ना तो परिवहन विभाग और ना ही दिल्ली सरकार इस तरफ़ देख रही है जिसके कारण दिल्ली की सड़को पर प्राइवेट वाहनों का बोझ तो बढ़ ही रहा है साथ ही साथ प्राइवेट नम्बर और बाहरी राज्यों में पंजीकृत वाहन बेखौफ दिल्ली की सड़को पर अवैध रूप से व्यवसायिक कार्यों को करते नजर आ रहे हैं। **दिल्ली भारत देश की राजधानी** पर सबसे अधिक प्रदुषित और साथ ही सार्वजनिक सवारी सेवा में फेल राजधानी बनकर रह गई है। दिल्ली की सड़को पर अवैध रूप से चलने वाले वाहनों के साथ ही बिना मान्य ड्राइविंग लाइसेंस के चालकों, बिना फिटनेस, बिना इंश्योरेंस के वाहनों की भरमार है। मोटर वाहन नियम जनता की सुरक्षा को मद्देनजर रखते हुए बनाए जाते है पर दिल्ली की सड़को पर चलते वाहनों को देखने से लगता है की दिल्ली में मोटर वाहन नियम नाम की कोई अहमियत ही नहीं है। आखिर क्यों ? दिल्ली उच्च न्यायालय के द्वारा पारित दिशा निर्देश और उपराज्यपाल द्वारा जारी अधिसूचना के बाद भी दिल्ली में **ई रिक्शे के लिए प्रतिबंधित सड़को पर ई रिक्शों का बेखौफ दौड़ना** वह भी बिना फिटनेस, बिना इंश्योरेंस, बिना मान्य चालक **क्या दर्शाता है ?**

दिल्ली के व्यवसायिक वाहन मालिकों से **महिला सुरक्षा के प्रति अनिवार्य वीएलटीडी/ पैनिक बटन** को आज तक खिलौना बना कर रहने देना और **खिलौने के लिए वाहन मालिक से ट्रेकिंग के नाम पर हर वर्ष फीस लेना क्या दिखाता है ?** आटो शाखा में आज तक **हस्तचालित कार्यशैली से काम करवाना** और मोटर वाहन नियम के बाहर जाकर **अपनी इच्छा की कार्यशैली से काम करवाना** और आवाज़ उठाने पर **आटो चालको को परेशानी में डाल कर भटकवाना क्या दिखाता है ?** दिल्ली में व्यवसायिक गतिविधियों में शामिल **वाहनों जिनकी मान्य समय सीमा समाप्त हो चुकी है को एनओसी जारी ना होने देना क्या दिखलाता है ?** ऐसा नहीं है की इनमे से एक भी परेशानी / मुद्दा परिवहन विभाग के आला अधिकारी खास तौर से विशेष परिवहन आयुक्त की जानकारी में नही हो पर वह इन परेशानियों का मोटर वाहन नियम/ अधिनियम/ धारा के अंतर्गत हल निकालना ही नहीं चाहते आखिर क्यों वह ज्यादा बेहतर जानते होंगे ! यह हम इसलिए कह रहे हैं क्योंकि अभी कुछ दिनों पहले ही उन्होने किसी **एक व्यवसायिक वाहन मालिक को फाइल में आदेश देकर एनओसी जारी करवाई है पर वह आदेश सभी के लिए जारी नही किया। दूसरा उदाहरण है की उनके पास आटो की रिप्लेसमेंट की एक फाइल पिछले कई दिनों से आई हुई है** पर उसपर आदेश करने के लिए उनके पास समय ही नहीं है जब की मोटर वाहन नियम के अंतर्गत और एनआईसी द्वारा निर्मित एप्लीकेशन के अनुसार रिप्लेसमेंट के लिए सिर्फ डीसी के साइन की आवश्यकता बनाई हुई है और एसटीए शाखा में यह कार्य प्रतिदिन हो रहा है पर इसके **आटो में शुरु हो जाने से हस्तचालित कार्यशैली में बाधा उत्पन्न हो जाएगी** और वाहन मालिक जिसे एक कार्य की जगह तीन बार हस्तचालित कार्यशैली की लिए नही आना पड़ेगा, इस लिए **आनलाइन आवेदन करने वाले आटो मालिक की फाइल अपने पास मंगवा कर रख छोड़ी,**

परिवहन विभाग के आला अधिकारी विशेष रूप से विशेष परिवहन आयुक्त व्यवसायिक क्षेत्र में जुडे छोटे/ एकल वाहन मालिकों को क्यो कर रहे हैं परेशान ? **क्या परिवहन आयुक्त इन सभी परेशानियों से एकल वाहन मालिकों को राहत देंगे, बड़ा सवाल ?**

परिवहन विशेष
देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र
Title Code : DELHIN28985
PARIVAHAN VISHESH NEWS
1. Web Portal https://www.newsparivahan.com/
2. facebook https://www.facebook.com/newsparivahan00
3. Twitter https://twitter.com/newsparivahan
4. Linkedin https://www.linkedin.com/in/news-parivahan-169680298/
5. Instagram https://www.instagram.com/news_parivahan/
6. Youtube https://www.youtube.com/@NewsParivahan
पर आप सभी के लिए 24 घण्टे उपलब्ध
3, प्रियदर्शिनी अपार्टमेंट, A-4 पश्चिम विहार, नई दिल्ली : 110063
सम्पर्क : 9212122095, 9811732095
www.newsparivahan.com, www.newstransport.in
Info@newsparivahan. com, news@newsparivahan.com
bathlasanjaybathla@gmail.com

## भारत का ईवी पर जोर, 2030 तक वाहनों की बिक्री का 30 प्रतिशत इलेक्ट्रिक करना लक्ष्य

**पारंपरिक ईंधनों से चलने वाले वाहनों की मांग धीरे-धीरे वैकल्पिक ईंधन का इस्तेमाल करने वाले वाहनों की ओर शिफ्ट (स्थानांतरित) हो रही है। केयर एज रेटिंग्स के एक विश्लेषण से यह पता चलता है।**

**नई दिल्ली।** पेट्रोल वाहनों की बिक्री का प्रतिशत, कुल वाहन बिक्री के प्रतिशत के रूप में, 2020 में 86 प्रतिशत से घटकर 2023 में 76 प्रतिशत हो गया है। जबकि डीजल वाहनों के लिए यह 2020 में 12 प्रतिशत से घटकर 2023 में 11 प्रतिशत हो गया है।

वैकल्पिक ईंधन से चलने वाले वाहनों की बिक्री मात्रा में कैलेंडर वर्ष (CY) 2023 में CY2020 की तुलना में 400 प्रतिशत से ज्यादा की बढ़ोतरी दर्ज की गई। हालांकि यह बहुत कम आधार पर है।

इस समय, इलेक्ट्रिक वाहन (EV) सबसे कम लाइफटाइम लागत प्रदान करते हैं। इसके बाद सीएनजी का नंबर आता है। ईवी की मांग तेजी से बढ़ रही है, जो सरकारी प्रोत्साहन, बैटरी की लागत कम होने और ईंधन लागत, विशेष रूप से पेट्रोल और डीजल की बढ़ती कीमतों से प्रेरित है। भारत का लक्ष्य 2030 तक सभी वाहनों की बिक्री का 30 प्रतिशत इलेक्ट्रिक करना है।

चार्जिंग स्टेशनों के विकास को प्रोत्साहित करने के लिए, भारत सरकार ने सब्सिडी और अनुदान जैसी वैकल्पिक ईंधन इंफ्रास्ट्रक्चर के विकास को प्रोत्साहित करने के लिए कई योजनाएं शुरू की हैं।

हालांकि ईवी की शुरुआती लागत ज्यादा होती है, लेकिन उनके कम ईंधन और रखरखाव खर्च, सरकारी प्रोत्साहनों के साथ, उन्हें लंबे समय में पेट्रोल और डीजल वाहनों की तुलना में अपेक्षाकृत ज्यादा लागत-प्रतिस्पर्धी बनाते हैं, खासकर हाई-माइलेज ड्राइवरों के लिए।

हाल ही में FAME-II स्कीम के लिए 1,500 करोड़ रुपये के बढ़े हुए आवंटन की घोषणा भारत में ईवी अपनाने को प्रोत्साहित करने की दिशा में एक सकारात्मक कदम है। FAME-II के बढ़े हुए आवंटन और रणनीतिक फोकस से मार्च 2024 तक भारत में ईवी अपनाने में तेजी लाने की उम्मीद है। ताकि संभावित खरीदारों को यह स्कीम खत्म होने से पहले इसका लाभ उठाने के लिए प्रोत्साहित किया जा सके।

कैरएज रेटिंग्स की एसोसिएट डायरेक्टर आरती रॉय ने कहा, ₹कुल मिलाकर, भारतीय ऑटोमोबाइल बाजार एक चौराहे पर है, जहां ईवी और सीएनजी वाहन, पेट्रोल और डीजल से चलने वाले वाहनों के पारंपरिक दबदबे को चुनौती देने के लिए मजबूत दावेदार के रूप में उभर रहे हैं। भविष्य सरकारी नीतियों, तकनीकी प्रगति और उपभोक्ताओं के चॉइस जैसी बातों पर निर्भर करेगा।

15 मार्च को, भारत को इलेक्ट्रिक वाहनों (ईवी) के लिए एक मैन्युफेक्चरिंग सेंटर (विनिर्माण केंद्र) के रूप में मजबूत करने की दिशा में एक कदम उठाते हुए, केंद्र सरकार ने एक व्यापक योजना को हरी झंडी दिखाई। जिसका मकसद ईवी क्षेत्र में निवेश आकर्षित करना और अत्याधुनिक तकनीक से लैस ईवी के स्वदेशी विनिर्माण को बढ़ावा देना है।

वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय द्वारा स्वीकृत यह नीति भारत में प्रतिष्ठित वैश्विक ईवी निर्माताओं को अपनी उपस्थिति स्थापित करने के लिए अनुकूल वातावरण को बढ़ावा देकर देश के वाहन परिदृश्य में क्रांति लाने के लिए तैयार है।

## सरकार जल्द ही इलेक्ट्रिक बसों के लिए स्वैपेबल बैटरी स्टैंडर्ड (नियम) तय कर सकती है

परिवहन विशेष न्यूज

**नई दिल्ली।** किसी भी एक्सेसिबल स्टेशन पर बैटरी बदलने में आसानी लाने के लिए सरकार जल्द ही इलेक्ट्रिक बसों के लिए स्वैपेबल बैटरी स्टैंडर्ड (नियम) तय कर सकती है। अभी ई-बसों में और अधिक कोऑर्डिनेटेड टेक्नोलॉजी की आवश्यकता है और इसीलिए ई- बसों की इंटरऑपरेबिलिटी पर ज्यादा फोकस किया जा रहा है। नए नियमों में साइज, वजन और कैपेसिटी का भी ध्यान रखा जाएगा। इन नियमों के जरिए ई-बसों के लिए बनी बैटरियों की इंटरऑपरेबिलिटी लाने की कोशिश की जाएगी। अभी कस्टम फिट बैटरियां फिलहाल ई-बस बनाने वाली कंपनियां प्रोप्राइटरी बैटरियों का उपयोग करती हैं जो व्हीकल में फिट होने के लिए तैयार की जाती हैं। इनमें लगभग शून्य इंटरऑपरेबिलिटी और वजन और क्षमता अलग- होती है। सरकारी टेंडर में केवल बैटरियों की चार्जिंग को स्टैंडर्डाइज्ड किया गया है। हाईवे पर होंगे स्वैपिंग स्टेशन रिपोर्ट के अनुसार नए नियमों में स्वैपेबल बैटरी नियम तय किए जाएंगे। अधिकारी ने कहा कि किसी शहर में सभी ई-बसों के लिए कॉमन बैटरी स्वैपिंग स्टेशन होना इंफ्रास्ट्रक्चर की आवश्यकताओं को कम करने और आउटपुट में सुधार करने का एक तरीका है। रेंज की चिंता दूर होगी उन्होंने कहा कि हाईवे पर स्वैपिंग स्टेशन होने चाहिए जो सभी ई-बसों को सर्विस दे सकें। उन्होंने कहा कि इन नियमों को जल्द ही मजबूत किए जाने की संभावना है। इन प्रस्तावित नियमों से ई-बस ऑपरेटरों में रेंज की चिंता दूर होगी, जो यात्रा के बीच में बैटरी डिस्चार्ज का सामना नहीं करना चाहते हैं। इंटरऑपरेबिलिटी का फायदा इंटरऑपरेबिलिटी उन बैटरियों के लिए रास्ता क्लियर करेगी जिन्हें हाईवे पर करीबी स्वैपिंग स्टेशनों या शहरी क्षेत्रों में बस डिपो पर तुरंत बदला जा सकता है। इससे सेक्टर में ग्रोथ होगी।

## आज की तारीख में भारत देश में इलेक्ट्रिक वाहनों पर जोर देने का अर्थ चीन की अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देना

परिवहन विशेष न्यूज

**नई दिल्ली।** एक तरफ भारत सरकार एवम्‌राज्य सरकारें जनता से चीन में बने सामान को खरीदने से मना करती हैं और दूसरी तरफ वाहन निर्माताओं द्वारा वाहनों में चीन में निर्मित आयातित कलपुर्जों द्वारा तैयार वाहनों को भारी उद्योग मंत्रालय द्वारा अधिकृत चारों वाहन टैस्टिंग सेंटरों से पास करवा कर भारत देश में बिकने के लिए सर्टिफिकेट जारी करवा रही है, और वाहन निर्माताओं को चीन के निर्मित कलपुर्जों द्वारा निर्मित वाहनों पर सब्सिडी भी दे रही है इसका अर्थ जनता क्या समझे, बड़ा सवाल ? **भारत के ईवी पर जोर देने से चीनी कंपनियां बड़े पैमाने पर घरेलू बाजार में कर रही हैं प्रवेश**

भारत सरकार द्वारा देश में इलेक्ट्रिक वाहनों के निर्माण को बढ़ावा देने पर जोर देने से घरेलू बाजार में बड़े पैमाने पर चीनी ऑटोमोबाइल कंपनियों की एंट्री हो रही है। शोध संस्थान जीटीआरआई की रविवार, 24 मार्च को एक रिपोर्ट में यह बात कही गई। ग्लोबल ट्रेड रिसर्च इनिशिएटिव (जीटीआरआई) ने कहा कि चीन में पर्याप्त सरकारी समर्थन से इलेक्ट्रिक वाहन प्रौद्योगिकी का तेजी से विकास हुआ है, जिससे यह ईवी और संबंधित घटकों का अग्रणी निर्यातक बन गया है। रिपोर्ट के मुताबिक भारत को ई-वाहन विनिर्माण का केंद्र बनाने के लिए नए सिरे से नीतिगत प्रोत्साहन देने और निजी क्षेत्र के आगे आने से चीन के वाहन कलपुर्जा आयात पर निर्भरता तेजी से बढ़ रही है। 2022-23 में भारत का ऑटो कंपोनेंट आयात 20.3 बिलियन अमेरिकी डॉलर रहा। इसमें से 30 फीसदी चीन से आया था। अनुमान के मुताबिक चीन के पास दुनिया की 75 फीसदी बैटरी उत्पादन क्षमता है और ईवी की लागत में बैटरी की हिस्सेदारी 40 फीसदी। वैश्विक ईवी उत्पादन और निर्यात में भी इसकी हिस्सेदारी 50 प्रतिशत से अधिक है। अगले कुछ वर्षों में भारत की सड़कों पर हर इलेक्ट्रिक यात्री और वाणिज्यिक वाहन चीनी कंपनियों द्वारा निर्मित कलपुर्जो या भारतीय कंपनियों के साथ संयुक्त उद्यम के माध्यम से बना हुआ मिलेगा। जीटीआरआई के संस्थापक अजय श्रीवास्तव ने कहा कि भारतीय बाजार में इलेक्ट्रिक वाहनों के प्रवेश से चीनी कंपनियों को बहुत राहत मिलती है। उन्होंने कहा, "सब्सिडी विरोधी जांच और सब्सिडी वाली कारों/ईवी बैटरियों के निर्यात पर बढ़ते व्यापार प्रतिबंधों के कारण यूरोपीय संघ और संयुक्त राज्य अमेरिका को चीन के ईवी निर्यात में गिरावट आ रही है।" **टोलवा के अध्यक्ष का कहना है कि भारत में इलेक्ट्रिक वाहनों पर जनता की निर्भरता बढ़ानी है तो भारत सरकार एवम्‌राज्य सरकारो को भारत में उपलब्ध कच्चे माल एल्यूमीनियम और सोडियम टेक्नोलॉजी से निर्मित बैटरियो का उत्पादन शुरू करवाने में तेजी लानी होगी और इस क्षेत्र में आगे आने वाले उद्यमियों को समर्थन, सहयोग एवम्‌सब्सिडी प्रदान करनी होगी। भारत देश की निर्मित बैटरी से इलेक्ट्रिक वाहनों की लागत में कमी आएगी और भारत की अर्थव्यवस्था में तेजी के साथ भारत की जनता को रोजगार भी उपलब्ध होगा।** इसके साथ ही भारत सरकार और राज्य सर कारो को **चीन के कलपुर्जों द्वारा निर्मित वाहनों को अधिकृत टेस्ट सेंटरों द्वारा भारत में बिकने के प्रति सर्टिफिकेट जारी करने पर पाबंदी लगानी होगी** जिससे कोई भी वाहन निर्माता चीन द्वारा निर्मित कलपुर्जों का प्रयोग भारत में बिकने वाले वाहनों में करने की सोचे।

टेंपल्स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत)
TOLWA
website : www.tolwa.in
Email : tolwadelhi@gmail.com
bathlasanjaybathla@gmail.com
रजिस्टर्ड अंडर सैक्शन 60 विद रजिस्ट्रेशन नंबर (152/02-03-2020), एमएसएमई रजिस्ट्रेशन नंबर उद्यम -डीएल - 0026470, नीति आयोग रजिस्ट्रेशन नंबर वीओ/एनजीओ/0303274/25-01-2022 दर्पण
रजिस्टर्ड कार्यालय :- 3, प्रियदर्शिनी अपार्टमेंट, ए -4 पश्चिम विहार, न्यू दिल्ली 110063
कॉरपोरेट कार्यालय :- 529, समयपुर, मेंन बवाना रोड, नियर बैंक ऑफ़ बड़ौदा दिल्ली 110042

# परिवार का रखना चाहती हैं खास ख्याल, महिलाएं 5 तरीकों की लें मदद, पूरी फैमिली की कर सकेंगी देखभाल

ाया जाए. इससे फैमली के सभी मेंबर्स हैप्पी और हेल्दी फील करेंगे और आप उनकी सुरक्षा को लेकर चिंतित नहीं रहेंगी.

**डाइट का रखें ध्यान:** आजकल ज्यादातर लोग, खासकर बच्चे जंक फ़ूड को डाइट में शामिल करना पसंद करते हैं. ऐसे में जरूरी है परिवार की महिलाएं अपने लाइफ पार्टनर के साथ मिलकर घर के बड़े और बच्चों की डाइट का ध्यान रखें. साथ ही जंक फ़ूड को अवॉइड करके परिवार के सभी सदस्यों को पोषक तत्वों से भरपूर चीजें सर्व करें. इससे घर के किसी सदस्य की सेहत अनहेल्दी डाइट की वजह से ख़राब नहीं होगी.

**एक्सरसाइज पर करें फोकस:** फैमिली के सभी मेंबर फिट एंड फाइन बने रहें, इसके लिए जरूरी है कि घर के सभी सदस्यों को डेली एक्सरसाइज करने के लिए प्रेरित किया जाए. ऐसे में आप हर फैमली मेंबर को वॉकिंग, साइकलिंग, योग और स्पोर्ट एक्टिविटी जैसी चीजों को रुटीन में शामिल करने की सलाह दें. इस तरीके से घर के सभी सदस्य फिट एंड फाइन बने रहेंगे.

**सेविंग को न करें नजरअंदाज:** आपका परिवार हमेशा खुश रहे इसके लिए आर्थिक रूप से मजबूत होना भी जरूरी है, इसलिए घर की महिलाओं के लिए जरूरी है कि वह हर महीने की इनकम से थोड़ी-थोड़ी सेविंग करती रहें. इसके साथ ही घर के मेम्बर्स को फिजूल खर्ची न करने की सलाह दें और खुद भी इस पर अमल करें. इस तरीके से कभी इमरजेंसी आ जाने पर आपको पैसों की टेंशन नहीं रहेगी.

**सेफ्टी का रखें ख्याल:** आजकल का माहौल काफी ख़राब है, ऐसे में खुद के साथ बच्चों और बड़ो की सेफ्टी का ख्याल भी जरूर रखें. इसके लिए बच्चों की अपब्रिंगिंग का भी ध्यान रखें और उनके स्कूल और दोस्तों से जुड़ी चीजों के बारे में जानकारी हासिल करती रहें. इसके साथ ही घर से बाहर जाते समय सबकी सुरक्षा पुख्ता कर लें, जिससे फैमली में खुशियां और पॉजिटिविटी बरकरार रह सके।

## प्रोटीन से भरपूर बाजरा देगा शरीर को कई फायदे, हार्ट भी रहेगा स्वस्थ

गेंहू-चावल की जगह आप बाजरे को अपनी डाइट में शामिल कर सकते हैं, इस को सूपर फूड भी कहा जाता है। जहां चावल में लगभग 82 % कार्बोहाइड्रेट पाया जाता है वहीं गेंहू में 76% और बाजरे में 78% कार्बोहाइड्रेट मौजूद होता है। इसके अलावा बाजरे में कॉम्पलेक्स, कार्बोहाइड्रेट, फाइबर, प्रोटीन, एंटीऑक्सीडेंट्स, विटामिन बी जैसे कई सारे पोषक तत्व पाए जाते हैं जो स्वास्थ्य के लिए बेहद लाभकारी माने जाते हैं। इसका सेवन करने से पेट लंबे समय तक भरा रहता है। इसके अलावा यह खून में चीनी की मात्रा बढ़ने से भी रोकता है। बाजरे का सेवन करने से डायबिटीज कंट्रोल और हार्ट हेल्दी रखने में मदद मिलती है। तो चलिए आपको बताते हैं इसे खाने से सेहत और क्या-क्या फायदे होते हैं...

**नाश्ते में खाने से मिलेगा फायदा**

एक्सपर्ट्स की मानें तो यदि बाजरे का सेवन सही समय पर किया जाए तो शरीर को ज्यादा स्वास्थ्य लाभ मिलते हैं। ब्रेकफास्ट के तौर पर आप इसका सेवन कर सकते हैं। इससे आप सारा दिन एनर्जेटिक रहेंगे और आपका पेट भरा हुआ रहेगा। इसके अलावा दोपहर के भोजन में गेंहू या फिर चावल की जगह आप इसका सेवन कर सकते हैं। रात में बाजरे का सेवन करने से पाचन में मदद मिलती है। इसमें फाइबर काफी अच्छी मात्रा में मौजूद होता है जिससे आपको रात में काफी अच्छी नींद आती है।

**अच्छी मात्रा में मौजूद होता है प्रोटीन**

बाजरे में लगभग 8-12 ग्राम प्रोटीन, फॉक्सटेल बाजरे में 10-12 ग्राम प्रोटीन और रागी में करीबन 7-10 ग्राम प्रोटीन मौजूद होता है। इसके अलावा बाजरे की अलग-अलग किस्म में भी प्रोटीन काफी अच्छी मात्रा

में मौजूद होता है। गेंहू या चावल की जगह आप इसका सेवन कर सकते हैं।

**मिनरल्स और विटामिन्स युक्त**

बाजरा और रागी में बी1, बी2, बी3, बी5, बी6 और बी9 काफी अच्छी मात्रा में पाया जाता है। यह विटामिन्स एनर्जी बढ़ाने, पाचन और रेड ब्लड सेल्स कोशिकाएं बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसके अलावा रागी में विटामिन-के, ए, कैल्शियम, सेलेनियम और आयरन काफी अच्छी मात्रा में मौजूद होता है। इसके अलावा इसमें कुछ खास एंटीऑक्सीडेंट्स बी सामिल होते हैं जो सुपरऑक्साइज रेडिकल्स का असर कम करते हैं।

हार्ट को रखता है स्वस्थ

एक्सपर्ट्स की मानें तो बाजरे में मैग्नीशियम काफी अच्छी मात्रा में पाया जाता है। यह हार्ट को स्वस्थ रखने के साथ-साथ उसे धड़कने में भी मदद करता है। इसमें पाया जाने वाला प्रोटीन, कार्डियोवेस्कुलर टिश्यू को बचाने में मदद करता है। इसके अलावा इसमें पाया जाने वाला विटामिन-बी3 हार्ट डिजीज का खतरा कम करके ऑक्सीडेटिव स्ट्रेस कम करने में मदद करता है।

## अकेलेपन से नहीं उबर पा रहीं? 5 टिप्स की मदद से खुद को रखें पॉजिटिव, डिप्रेशन एंजाइटी भी रहेंगे दूर

**लोगों के बीच रहते हुए भी खुद में अकेलापन महसूस करना आपके मेंटल हेल्थ को काफी प्रभावित कर सकता है. खुद को अगर आप ऐसे हालात से बाहर निकालना चाहती हैं तो कुछ टिप्स की मदद लें.**

अकेलापन, हालात नहीं, एक तरह की फीलिंग है जिसमें इंसान भीड़ में रहकर भी खुद को अलग थलग पाता है. यह आपके मेंटल फिजिकल हेल्थ को सीधे तौर पर प्रभावित करता है और अगर आप इस इमोशन को सही तरीके से डील ना कर पाए तो स्ट्रेस, डिप्रेशन, एंजाइटी की गिरफ्त में आसानी से आ सकते हैं. यही नहीं, अधिक दिनों तक अगर आप इस हालात में रहे तो ये आपके शारीरिक सेहत को भी प्रभावित करने लगता है. अगर आप भी इस तरह अकेलापन महसूस कर रहे हैं तो कुछ तरीके हैं जिसकी मदद से आप सकारात्मक महसूस कर सकते हैं.

**अकेलेपन को ऐसे करें दूर**

**क्लब या क्लास ज्वाइन करें**

वेरीवेल माइंड के मुताबिक, अगर आप खुद को अलग थलग महसूस करें तो जरूरी है कि आप अपने लिए एक ऐसा ग्रुप ढूंढ लें जिसमें आपके जैसे लोग हों. इसके लिए आप अपने आसपास कोई क्लब या हॉबी क्लास ज्वाइन करें. इस तरह आप एक ग्रुप का हिस्सा बन पाएंगे और खुद को अकेलेपन से बाहर निकाल पाएंगी.

**इन उपायों से दूर होगी घर की निगेटिव एनर्जीआगे देखें...**

**वॉलेंटियरिंग करें**

अगर आप अपनी जिंदगी से सेटिस्फाई रहेंगी तो आप बेहतर महसूस कर पाएंगी. इसके लिए आप उन जगहों पर वॉलेंटियरिंग कर सकते हैं जहां काम कर आप लोगों की मदद कर सकें और दूसरों की जिंदगी को आसान बना पाएं. यह भावना आपके अकेलेपन को दूर करने का काम कर सकती है.

**ऑनलाइन सपोर्ट**

आप सोशल मीडिया का सकारात्मक तरीके से इस्तेमाल करें और फीयर ऑफ मिसिंग आउट वाली फीलिंग से बाहर निकालें. यहां आकर आप लोगों से जुड़ सकते हैं और बातचीत का हिस्सा बन सकते हैं.

**अपनों से मिलें जुलें**

अगर आप बेहतर महसूस ना कर पा रही हैं तो अपने उन परिवार के सदस्यों, पुराने दोस्तों या टीचर आदि से मिलने का प्लान बनाएं जिनके साथ आप पॉजिटिव महसूस करती हैं. यकीन मानिए, आप ऐसे लोगों से मिलकर बेहतर महसूस करेंगे और आपका मेंटल हेल्थ भी अच्छा होगा.

**सेल्फ केयर**

खुद के लिए वक्त निकालना शुरू करें. वॉक पर जाएं, रिलैक्स करें, भरपूर नींद लें, अपने पसंद की चीजों को बनाएं और खाएं. डॉक्टर से मिलें, चेकअप कराएं और जरूरी सप्लीमेंट का सेवन करें और खुद को व्यस्त रखें.

# पेरेंट्स बच्चों को सिखाएं मातृभाषा का महत्व

बदलते दौर में अंग्रेजी का चलन इतना बढ़ गया है कि लोग हिंदी भाषा की अहमियत ही भूलते जा रहे हैं। हिंदी दिवस का महत्व बताने के लिए हर साल 14 सितंबर को हिंदी दिवस मनाया जाता है। बदलती पीढ़ी हिंदी का महत्व बिल्कुल भूलती जा रही है। ऐसे में बच्चों को अपनी मातृभाषा के पास रखना जरुरी है। बच्चों को हिंदी भाषा की अहमियत बतानी पड़ेगी। उन्हें बताना पड़ेगा कि हिंदी का इतिहास कितना समृद्ध है। आज हिंदी दिवस के मौके पर आपको बताते हैं कि आप बच्चों को मातृभाषा के करीब कैसे रख सकते हैं....

**रोजाना करें हिंदी का इस्तेमाल**

बच्चे अपने आस-पास जो भी चीजें देखते हैं या सुनते हैं उसको बहुत ही जल्दी सीखते हैं ऐसे में यदि आप चाहते हैं कि वह अपनी भाषा के करीब रहें तो रोजाना की रुटीन में हिंदी भाषा शामिल करें। इस तरह वह हिंदी को जान पाएंगे। हिंदी में आप उन्हें कविताएं, कहानियां, मुहावरें सुनाएं। इससे उनको भाषा भी समझ आएगी और इसके प्रति उनका सम्मान भी बढ़ेगा।

**बच्चों को सिखाएं भाषा की अहमियत**

व्यक्ति किसी भी चीज की कद्र तभी करता है अगर उसको उस चीज की अहमियत पता हो। ऐसे में जरुरी है कि आप बच्चों को मातृभाषा की अहमियत सिखाएं। पहले बच्चों को स्कूल में यह बताया जाता था लेकिन अब बदलते समय के साथ स्कूल में अंग्रेजी पर ही ज्यादा जोर दिया जाता है। ऐसे में जिंदगी की चुनौतियां भी बढ़ गई हैं इसलिए जरुरी है कि उन्हें भाषा की अहमियत सिखाई जाए।

**इतिहास के बारे में बताएं**

बच्चों को आप हिंदी भाषा का इतिहास जरुर बताएं। उन्हें बताएं कि हिंदी भाषा में लिखे लेखकों के लेख पूरी दुनिया में प्रचलित हैं। मातृभाषा में काम करने वाले व्यक्ति को पूरी दुनिया में सम्मान की नजर के साथ देखा जाता है। इस तरह की बातें जानकर बच्चों के दिल में हिंदी भाषा के प्रति आत्म सम्मान बढ़ेगा।

**स्पीच करवाएं तैयार**

आप बच्चों को हिंदी दिवस पर एक स्पीच तैयार करवा सकते हैं। इससे बच्चों को हिंदी बोलनी भी आएगी और उनमें इसे लेकर आत्मविश्वास भी बढ़ेगा।

## दिल से लेकर दातों तक को मजबूत करती है ब्रॉकली, जानिए इसे खाने के अनेक फायदे...

ब्रोकली वैसे दिखने में तो गोभी जैसा नजर आता है, लेकिन उससे कहीं ज्यादा फायदेमंद होती है। इसमें भरपूर मात्रा में प्रोटीन पाया जाता है। बता दें प्रोटीन भी हमारे शरीर के लिए बहुत जरूरी है। इसलिए प्रोटीन की पूर्ति के लिए इसका सेवन कर सकते हैं। साथ ही इसमें कैल्शियम, कार्बोहाइड्रेट, आयरन, विटामिन ए, सी और कई दूसरे पोषक तत्व पाए जाते हैं. इसमें कई प्रकार के लवण भी पाए जाते हैं, जो शुगर लेवल को संतुलित बनाए रखने में मददगार हैं....

**इम्यूनिटी को बूस्ट करता है ब्रोकली**

ब्रोकली में विटामिन सी प्रचूर मात्रा में पाई जाती है। विटामिन सी शरीर के इम्यून सिस्टम को बूस्ट करने और संक्रमण से बचाने में मददगार है।

**दिल को रखती है स्वस्थ**

इसमें पाए जाने वाले सेलेनियम और ग्लूकोसिनोलेट्स जैसे तत्व दिल को स्वस्थ रखने वाले प्रोटीन को बढ़ाने का काम करते हैं। इसलिए यह दिल की सेहत के लिए बहुत फायदेमंद है।

**लीवर को करता है मजबूत**

ब्रोकली को डाइट में शामिल करने से लिवर क्षति का जोखिम कम होता है। साथ ही फैटी लिवर की समस्या में लाभ मिलता है। इसलिए लीवर को मजबूत बनाने के लिए ब्रोकली का सेवन करना चाहिए।

**प्रेग्नेंट महिलाओं के लिए भी लाभकारी**

ब्रोकली में मौजूद प्रोटीन, आयरन, फोलेट और विटामिन सी जैसे पोषक तत्व प्रेग्नेंट महिलाओं के लिए जरूरी माने जाते हैं। इसलिए प्रेग्नेंट महिलाओं को इसका सेवन जरूर करना चाहिए।

**हड्डियों और दांतों की सेहत का रखती है ख्याल**

इसमें कैल्शियम प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं। जो हड्डियों और दांतों के लिए बहुत लाभकारी है।

# 'केजरीवाल की विचारधारा को कैसे जेल में डालेंगे'
## आप ने मुख्यमंत्री के समर्थन में चलाया डीपी बदलो अभियान

*आतिशी ने सोशल साइट एक्स पर लिखा, मोदी का सबसे बड़ा डर- केजरीवाल। प्रधानमंत्री ने साजिश के तहत लोकसभा चुनाव के ठीक पहले दिल्ली के बेटे अरविंद केजरीवाल को जेल में बंद कर दिया है, दिल्लीवाले इस तानाशाही के खिलाफ अपना विरोध दर्ज कराएं।*

परिवहन विशेष न्यूज

आम आदमी पार्टी (AAP) ने मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल (Delhi CM Arvind Kejriwal) के समर्थन में सोमवार से इंटरनेट मीडिया पर डीपी बदलो अभियान (DP Change Campaign) की शुरुआत की। आप के सभी सांसद विधायक पार्षद नेता और कार्यकर्ता एक साथ अपनी डीपी बदल रहे हैं। कैबिनेट मंत्री आतिशी ने आम जनता से भी अपील की है कि जो भी लोग केजरीवाल का समर्थन करते हैं वे अपनी डीपी बदलें।

**दिल्ली**। आम आदमी पार्टी (AAP) ने मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल (Delhi CM Arvind Kejriwal) के समर्थन में सोमवार से इंटरनेट मीडिया पर डीपी बदलो अभियान (DP Change Campaign) की शुरुआत की। आप के सभी सांसद, विधायक, पार्षद, नेता और कार्यकर्ता एक साथ अपनी डीपी बदल रहे हैं।

इस बारे में आप नेता और कैबिनेट मंत्री आतिशी ने आम जनता से भी अपील की है कि जो भी लोग केजरीवाल का समर्थन करते हैं, वे अपनी डीपी बदलें। उन्होंने कहा कि ₹मोदी जी का सबसे बड़ा डर केजरीवाल₹ लोगो वाली डीपी लगाएंगे।

**AAP द्वारा जारी की गई डीपी**

सिर्फ केजरीवाल दे सकते हैं चुनौती उन्होंने कहा कि भारतीय जनता पार्टी और मोदी जी ने अरविंद केजरीवाल को जेल में डलवा दिया है, वह भी ऐसे फर्जी केस में कि जिसमें केजरीवाल और उनके किसी नेता के पास पिछले दो साल की जांच में भी एक सुबूत नहीं मिला है।

यह इसलिए किया गया है कि मोदी जी को पता है कि अगर देश में कोई नेता है जो मोदी जी को चुनौती दे सकता है वह केजरीवाल हैं। उन्होंने कहा कि केजरीवाल को तो ये जेल में डाल देंगे मगर केजरीवाल की विचारधारा को जेल में कैसे डालेगे। देश में हजारों केजरीवाल तैयार होंगे किसे किसे ये जेल में डालेंगे। इसलिए हम इनसे डरने वाले नहीं हैं।

**आतिशी ने एक्स पर की अपील**

आतिशी ने सोशल साइट एक्स पर लिखा, मोदी का सबसे बड़ा डर- केजरीवाल। प्रधानमंत्री ने साजिश के तहत लोकसभा चुनाव के ठीक पहले दिल्ली के बेटे अरविंद केजरीवाल को जेल में बंद कर दिया है, दिल्लीवाले इस तानाशाही के खिलाफ अपना विरोध दर्ज कराएं।

पीएम मोदी केजरीवाल से डरते हैं, इस संदेश को जन-जन तक पहुंचाएं। कृपया अपनी डीपी (डिस्प्ले पिक्चर) व्हॉट्सऐप, इंस्टाग्राम, फेसबुक, ट्विटर, समेत सभी सोशल मीडिया अकाउंट्स पर बदलें। आप नीचे दी गई तस्वीर को अपनी डीपी बनाकर इस मुहिम से जुड़ सकते हैं। साथ ही आप नीचे दिए लिंक पर क्लिक करके अपनी फोटो के साथ डीपी भी बना सकते हैं

आतिशी एक अन्य पोस्ट में कहा, जैसे कंस को पता था कि उसका अंत भगवान कृष्ण के हाथों होगा; जैसे रावण को पता था कि उसका अंत भगवान श्री राम के हाथों से होगा। इसी तरह प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी को पता है कि उनको हराने वाला अरविंद केजरीवाल ही होगा। इसी डर की वजह से आज मोदी जी ने अरविंद केजरीवाल को गिरफ्तार किया है। लेकिन अरविंद केजरीवाल सिर्फ एक इंसान नहीं, एक विचार है और देश के लाखों लोग अरविंद केजरीवाल के साथ खड़े हैं। तो अरविंद केजरीवाल के समर्थन में सभी से अपील है कि http://indiawithkejriwal.com पर जा कर, अपनी डीपी बदलें। लोकतंत्र को बचाने की इस लड़ाई में साथ आएं।

# खालिस्तानी आतंकी पन्नू ने आप को दिए 133 करोड रूपये : पन्नू

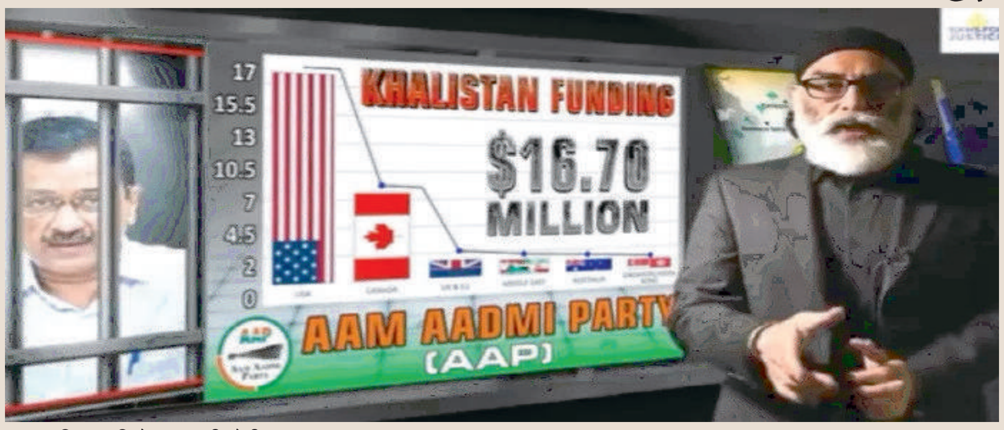


परिवहन विशेष। एस.डी.सेठी।

**नई दिल्ली**। खालिस्तानी आतंकी गुरप्रीत पतवंत सिंह पन्नू ने बडा चौंकाने वाला दावा किया है।पन्नू ने दावा किया है, कि अरविंद केजरीवाल को- खालिस्तानी भुल्लर को रिहा करने के लिए 133 करोड रूपये की फंडिंग की थी। इस बयान के बाद मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की मुसीबतें और बढ गई है। एक तरफ तो कथित शराब नीति घोटाला मामले में केजरीवाल ईडी की हिरासत में है वहीं दूसरी और अमेरिका स्थित खालिस्तानी आतंकवादी गुरप्रीत पतवंत सिह पन्नू ने बडा दावा करते हुए कहा है कि खालिस्तानी समूहों ने 2014 और 2022 के बीच आप के खजाने में 16 मिलियन डॉलर (133 करोड) रूपये की भारी रकम दी थी। पन्नू ने आगे आरोप लगाया कि दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने पैसे के बदले आतंकवादी देवेंद्र पाल सिंह भुल्लर को रिहा करने का एक चौंकाने वाला प्रस्ताव रखा था। उल्लेखनीय है कि खालिस्तानी आतंकवादी देविन्दर पाल सिंह भुल्लर को साल 1993 के दौरान दिल्ली में हुए बम विस्फोट में आरोपी घोषित किया गया था। जिसकी वजह से वो जेल की हवा खा रहा है। बता दें कि देविन्दर पाल सिंह भुल्लर को भारतीय इतिहास के खतरनाक आतंकियों में से एक माना जाता है।सूत्रों के मुताबिक पन्नू के इस दावे के खुलासे के बाद सरकार एक्शन में आ गई है। वह खालिस्तानी पन्नू के वायरल वीडियो के खुलासे की पूरी जांच में जुट गई है।

# दिल्ली में होली पर गोलीबारी: आजादपुर मंडी में युवक को मारी गोली, घायल को अस्पताल में कराया गया भर्ती

आजादपुर मंडी के अंदर बदमाशों ने एक युवक पर ताबड़तोड़ फायरिंग कर दी। युवक के कंधे में गोली लगी है जिसे आनन फानन जहांगीरपुरी स्थित बाबू जगजीवन राम अस्पताल में भर्ती कराया गया है। पुलिस के मुताबिक घायल की पहचान अनिल के रूप में हुई है। महिंद्रा पार्क थाना पुलिस ने संबंधित धाराओं में मामला दर्ज कर आरोपित का पता लगा रही है।

**दिल्ली**। आजादपुर मंडी के अंदर बदमाशों ने एक युवक पर ताबड़तोड़ फायरिंग कर दी। युवक के कंधे में गोली लगी है, जिसे आनन फानन जहांगीरपुरी स्थित बाबू जगजीवन राम अस्पताल में भर्ती कराया गया है। पुलिस के मुताबिक घायल की पहचान अनिल के रूप में हुई है। महिंद्रा पार्क थाना पुलिस ने संबंधित धाराओं में मामला दर्ज कर आरोपित का पता लगा रही है। शुरुआती जांच में पुलिस आपसी रंजिश में गोली मारने का मामला बता रही है। पुलिस का कहना है कि जल्द ही आरोपित को पकड़ लेगी।

# केवल गैंग जेल से चलते हैं... अरविंद केजरीवाल के जेल से दिल्ली सरकार चलाने पर किसने बोला बड़ा हमला

परिवहन विशेष न्यूज

भाजपा ने आम आदमी पार्टी (AAP) के उस बयान कड़ी प्रतिक्रिया दी है जिस पर कहा गया कि मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल जेल से दिल्ली की सरकार चलाएंगे। भाजपा के महासचिव दुष्यंत कुमार ने कहा अरविंद केजरीवाल एक गिरोह के नेता हैं और केवल गिरोह ही जेल से चलते हैं। बता दें कि आप नेता आतिशी ने रविवार को कहा था कि अरविंद कजेरीवाल जेल ही सरकार चलाएंगे।

**नई दिल्ली**। भाजपा ने आम आदमी पार्टी (AAP) के उस बयान कड़ी प्रतिक्रिया दी है, जिस पर कहा गया कि मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल जेल से दिल्ली की सरकार चलाएंगे। भाजपा के महासचिव दुष्यंत कुमार ने कहा, ₹अरविंद केजरीवाल एक गिरोह के नेता हैं, और केवल गिरोह ही जेल से चलते हैं।₹

बता दें कि आप नेता आतिशी ने रविवार को कहा था कि अरविंद केजरीवाल जेल ही सरकार चलाएंगे।

बीजेपी महासचिव दुष्यंत कुमार ने कहा कि यह दुर्भाग्य की बात है कि मुख्यमंत्री जेल के अंदर हैं और अपनी जिद के कारण सरकार वहां से चलाना चाहते हैं। आज तक ऐसा नहीं हुआ है, यह लोकतंत्र का अपमान है। सभी सबूत उनके खिलाफ हैं और इसके बावजूद वह बहुत जिद्दी हैं, जिसके कारण उन्हें ये परिणाम भुगतना पड़ा। अरविंद केजरीवाल एक गिरोह के नेता हैं, केवल चोर ही जेल से गिरोह चलाते हैं।

आप नेता आतिशी ने मीडिया से बात करते हुए कहा था कि हमने हमेशा कहा है कि अरविंद केजरीवाल जेल से सरकार चलाएंगे। वह दिल्ली के सीएम बने रहेंगे। हमने सुप्रीम कोर्ट में मामला दायर किया है।

**क्या कहते हैं कानून के जानकार**

कानूनी विशेषज्ञों की राय है कि अरविंद केजरीवाल को जेल से अपने कर्तव्यों का निर्वहन करने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है। हालांकि, कानून किसी को भी जेल से सरकार का नेतृत्व करने से नहीं रोकता है।

संवैधानिक विशेषज्ञ पीडीटी आचार्य ने बताया कि तिहाड़ जेल के अंदर एक कैदी के रूप में केजरीवाल को विभिन्न प्रतिबंधों का सामना करना पड़ेगा। केजरीवाल की

गिरफ्तारी से मुख्यमंत्री के रूप में उनकी स्थिति में कोई बदलाव नहीं आएगा। अगर जेल मैनुअल ऐसी चीजों की अनुमति देता है, तो ठीक है; अन्यथा, उसे अदालत से अनुमति लेनी होगी और फिर अदालत को जेल अधिकारियों को एक विशिष्ट निर्देश देना होगा।

**28 मार्च तक ईडी की रिमांड पर सीएम**

ईडी ने अरविंद केजरीवाल को बृहस्पतिवार को गिरफ्तार किया था। इसके बाद उन्हें शुक्रवार को राऊज एवेन्यू कोर्ट में पेश किया और पूछताछ के लिए 10 दिनों की रिमांड मांगी, लेकिन कोर्ट ने छह दिन की रिमांड दी। अब सीएम केजरीवाल 28 मार्च तक ईडी की रिमांड में रहेंगे। सुनवाई में ईडी की तरफ से एडिशनल सॉलिसिटर जनरल जबकि केजरीवाल की तरफ से वरिष्ठ वकील अभिषेक मनु सिंघवी शामिल हुए।

केजरीवाल को 28 मार्च को दोपहर दो बजे दोबारा पेश करने का निर्देश देते हुए अदालत ने कहा कि पूछताछ की पूरी कार्यवाही कैमरे में रिकार्ड की जाएगी।

# अलीपुर के तीन गोदामों में लगी भीषण आग, सुबह से दमकल की 30 गाड़ियां काबू पाने में जुटीं

दिल्ली के अलीपुर में सोमवार की सुबह लगभग 6 बजे एक इलेक्ट्रॉनिक्स सामान के गोदाम में भीषण आग लग गई। इसके बाद आग दो और गोदानों में फैल गई। दमकल की गाड़ियां सूचना मिलते ही पहुंच गईं आग अभी तक बुझ नहीं पाई है। दिल्ली अग्निशमक की 30 गाड़ियां अब तक पहुंच चुकी हैं। आग के कारण आसमान में धुएं का गुबार छाया हुआ है।

**बाहरी दिल्ली**। अलीपुर स्थित बूढ़पुर क्षेत्र में सोमवार की सुबह करीब 6:15 बजे एक इलेक्ट्रॉनिक्स सामान के गोदाम में भीषण आग लग गई। देखते ही देखते आग पास के दो अन्य गोदाम तक फैल गई। आसमान में धुएं का गुबार उठता देख आसपास के लोग भी घटनास्थल के पास पहुंच गए। इसकी सूचना तुरंत दमकल विभाग व पुलिस कंट्रोल रूम को दी गई। सूचना पर पहुंची एक के बाद एक 30 दमकल की गाड़ियां आग बुझाने में जुटी हैं। करीब छह घंटे बाद भी आग पर पूरी तरह से काबू नहीं पाया गया है। इस दौरान इन गोदामों में रखे लाखों रुपये के एसी, कूलर, वाशिंग मशीन समेत अन्य सामान जलकर राख हो गए। फिलहाल आग के कारणों का पता नहीं चल सका है। पुलिस पूरे मामले की जांच में जुटी है।

**लोगों ने भागकर बचाई जान**

जानकारी के मुताबिक पहले जिस गोदाम में आग लगी, वहां कई लोग मौजूद थे। आग की भनक लगते ही लोगों ने समय रहते बाहर निकलकर अपनी जान बचाई। भीषण आग होने की वजह से देखते ही देखते आसपास के दो अन्य गोदामों को भी अपनी चपेट में ले लिया। सूचना पर पहुंचे दमकलकर्मी आग बुझाने में जुट गए।

# जल-संरक्षण के उद्देश्य से हैंडप्रिंट पेंटिंग के लिए शिव नादर स्कूल ने गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड्स (TM) का खिताब किया अपने नाम

परिवहन विशेष न्यूज

**नई दिल्ली**। शिव नादर स्कूल के 2232 छात्रों एवं शिक्षकों ने शिव नादर स्कूल, फ़रीदाबाद में 14 मार्च, 2024 को पर्यावरण जागरूकता के लिये शुरू की गई अनोखी पहल में एक घंटे में सबसे अधिक संख्या में हैंडप्रिंट पेंटिंग के लिए गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड का ख़तिाब जीत कर एक विश्व रिकॉर्ड कीर्तिमान स्थापित किया। इस कार्यक्रम में भाग लेने वाले सभी छात्रों एवं शिक्षकों ने #EveryDropCounts की शपथ ली. शिव नादर स्कूल की जिम्मेदारी के बुनियादी सिद्धांत और संयुक्त राष्ट्र सतत विकास के स्वच्छ पानी और स्वच्छता के इस संदेश को प्रभावी ढंग से लोगों तक पहुंचाने का एक प्रयास है कि जल एक महत्वपूर्ण संसाधन है और इसका संरक्षण आवश्यक है।

स्कूल द्वारा शुरू की गई इस पहल के तहत आयोजित कार्यक्रम में कर्नल (रिटायर्ड) गोपाल करुणाकरण, सीईओ, शिव नादर स्कूल; मिस आरती डावर, डिप्टी सीईओ, शिव नादर स्कूल; मिस अंजू वाल, डायरेक्टर प्रिंसिपल, शिव नादर स्कूल, फ़रीदाबाद; मिस अंजू सोनी, प्रिंसिपल, शिव नादर स्कूल, नोएडा; मिस मोनिका सागर, डायरेक्टर प्रिंसिपल, शिव नादर स्कूल, गुरुग्राम; मिस वंदना मार्दा, डायरेक्टर ब्रांड एंड कम्युनिकेशन, शिव नादर स्कूल; और श्री ऋषि नाथ, आधिकारिक निर्णायक, गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड्स, ने अपनी उपस्थिति दर्ज की। इस कार्यक्रम का शुभारंभ मिस गुल पनाग ने किया, जिन्हें उनकी विभिन्न भूमिकाओं के लिए जाना जाता है - एक अभिनेत्री, मॉडल, एक्टिविस्ट, और उद्यमिता जो शिक्षा, पर्यावरणीय मुद्दों, और आपदा प्रबंधन पर काम करती हैं।

इस अवसर पर मिस गुल पनाग ने गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड तोड़ने और यह बेमिसाल उपलब्धि के लिए शिव नादर स्कूल के छात्रों को बधाई देते हुए कहा, "इस आयोजन का हिस्सा बनना मेरे लिए सचमुच बड़ा रोमांचक अनुभव था, इसका आयोजन जल संरक्षण जैसे नेक काम और बच्चों में बदलाव लाने, पर्यावरण के प्रति जागरूकता पैदा करते हैं

कर्नल (रिटायर्ड) गोपाल करुणाकरण, सीईओ, शिव नादर स्कूल ने कहा, "इस बात का अनुमान है कि कुछ सालों के भीतर कई क्षेत्रों में दुनिया की आधी आबादी को पानी की भारी कमी का सामना करना पड़ेगा। हमें इस संसाधन के दोबारा उपयोग में लाने के नए तरीकों को ढूंढने की जरूरत है, ताकि पानी हर किसी के लिए उपलब्ध हो सके। हम बच्चों को पर्यावरण और हमारे प्राकृतिक संसाधनों के प्रति संवेदनशील बनाएँ। शिव नादर स्कूल हमेशा सस्टेनेबिलिटी पर विशेष ध्यान दिया है। यह शपथ : यह धरती की देखभाल करने वाले के रूप में हम सबकी साझा ज़िम्मेदारी के जागरूकता का प्रतीक है।"डिप्टी सीईओ, मिस आरती डावर ने कहा, "आज हम निकट भविष्य में बेहद गंभीर जल-संकट के कगार पर खड़े हैं। समय की मांग अब पानी की हिफाज़त की जाए। 'हर बूँद मायने रखती है' के शपथ में भाग लेकर हमने इतिहास रचा है, साथ ही यहाँ हममें से प्रत्येक व्यक्ति बदलाव लाने वाला है, और आज हम जल संकट की चुनौतियों को हल करने की दिशा में अपनी जिम्मेदारी को पहचान रहे हैं। हमारी शपथ, सही मायने में जल संरक्षण की दिशा में हमारे सफ़र और आंदोलन की शुरुआत है।"

यह आयोजन 2,500 से ज्यादा प्रतिभागियों ने साथ मिलकर हैंडप्रिंट पेंटिंग के ज़रिये एक शानदार कलाकृति तैयार की, जिनमें छात्रों और शिक्षकों के अलावा कार्यक्रम में उपस्थित गणमान्य अतिथि भी शामिल थे.

शिव नादर स्कूल में ब्रांड एंड कम्युनिकेशन डायरेक्टर, वंदना मार्दा के धन्यवाद प्रस्ताव के साथ दिन का समापन हुआ उन्होंने कहा कि यह उपलब्धि सभी के समर्पण, जुनून और दृढ़ संकल्प के बिना हासिल नहीं की जा सकती थी। शिव नादर स्कूल अत्याधुनिक वॉटर-प्युरीफिकेशन सिस्टम को इंस्टॉल करने और समय-समय पर पानी की गुणवत्ता की जाँच करने और स्कूल जल संरक्षण के अपने संकल्प पर अटल है। इन सब बातों के अलावा, स्कूल वर्कशॉप तथा इनोवेटिव प्रोजेक्ट्स के ज़रिये भी अपने छात्रों को जल संरक्षण के बारे में शिक्षित करता है। स्कूल डुअल फ्लशिंग सिस्टम और वर्षा जल संचयन-प्रक्रिया जैसे उपायों को अपनाकर जल संरक्षण को बढ़ावा देता है, और इस तरह पर्यावरण के स्थायित्व में अहम योगदान दे रहा है।

# आप के सत्येंद्र जैन फिर गए तिहाड जेल के अंदर

दिल्ली के अलीपुर थाना क्षेत्र सोमवार की सुबह खून की होली खेली गई। आरोप है कि पति ने ही अपनी पत्नी की तेजधार हथियार से गला रेतकर मौके से फरार हो गया। सूचना पर पहुंची अलीपुर थाना पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर जहांगीरपुरी स्थित बाबू जगजीवन राम अस्पताल में के शवगृह में सुरक्षित रखवा दिया है।

**नई दिल्ली**। अलीपुर थाना क्षेत्र सोमवार की सुबह खून की होली खेली गई। आरोप है कि पति ने ही अपनी पत्नी की तेजधार हथियार से गला रेतकर मौके से फरार हो गया। सूचना पर पहुंची अलीपुर थाना पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर जहांगीरपुरी स्थित बाबू जगजीवन राम अस्पताल में के शवगृह में सुरक्षित रखवा दिया है।

पुलिस ने हत्या व अन्य संबंधित धाराओं में मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। पति के संभावित ठिकानों पर पुलिस लगातार छापेमारी कर रही है।

**सुबह बच्चों की चीखें निकली**

आरती (30) अपने पति मंजीत व दो बच्चों के साथ बख्तावरपुर गांव स्थित बलधारी कॉलोनी रहती थी। जानकारी के अनुसार, परिवार के सभी सदस्य कल देर रात होलिका दहन के बाद अपने-अपने कमरे में सोने चले गए। होली की सुबह इस घर से आरती के बच्चों के चीखने-चिल्लाने की आवाज सुनाई दी।

आसपास के लोगों ने देखा कि आरती मृत अवस्था में खून से लथपथ जमीन पर पड़ी है, जिसकी तेजधार हत्यार से गर्दन को रेता गया है। इसकी सूचना आरती के मायके वालों को दी गई। नजफगढ़ से पहुचे मायके पक्ष ने आरोप लगाया है कि आरती की हत्या के पीछे उसके पति मंजीत का हाथ है। जो वारदात को अंजाम देने के बाद से ही फरार है।

**ससुराल वालों ने किया था होलिका दहन**

मंजीत के परिवार के बाकी अन्य सदस्य भी घर छोड़कर फरार हो गए हैं। पड़ोसियों में भी मातम का माहौल है। पड़ोसियों का कहना है कि कल तक इस परिवार में सबकुछ सही चल रहा था। इन्होंने खुशी के साथ होलिका दहन भी किया। रातभर में फिर ऐसा क्या हुआ कि आरती की हत्या कर दी गई।

**आरती का शव देने से परिजनों का इनकार**

घटनास्थल पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेने की कोशिश की। लेकिन, मृतिका आरती के मैके पक्ष के लोगों ने पुलिस को शव कब्जे में लेना का विरोध करने लगे। इनका कहना था कि पहले आरोपित की गिरफ्तारी हो, फिर शव पोस्टमॉर्टम के लिए देंगे।

काफी जद्दोजहद के बाद अलीपुर थाना पुलिस ने मृतिका आरती के शव को कब्जे में लिया। बताया जा रहा है कि मौके से खून से सना एक चाकू भी बरामद हुआ है।

**पति-पत्नी में कभी नहीं हुआ विवाद**

पड़ोसियों व परिवार के अन्य सदस्यों का कहना है कि आरती के सुसराल में कभी भी किसी तरह का कोई झगड़ा नहीं हुआ। नहीं दहेज को लेकर कोई मांग थी। लेकिन होली की सुबह न जाने ऐसी कौन सी बात हुई कि दिन निकलते ही आरती की तेजधार हत्यार से गर्दन काटकर निर्मम हत्या कर दी गई।

आरती की शादी वर्ष 2018 में मनजीत के साथ हुई थी। आरती का एक बेटा और एक बेटी है। बताया जा रहा है कि पिछले पांच सालों में इनके बीच कोई झगड़ा तक नहीं हुआ था। परिवार खुशी के साथ रह रहा थाा। पड़ोसियों के घर में छिपे मंजीत के परिवार के अन्य सदस्यों को अलीपुर थाना पुलिस ने हिरासत में ले लिया है। इस पूरे मामले की जांच पुलिस गंभीरता से जुटी है। आरोपित का पता लगाने के लिए पुलिस के आलाधिकारियों के निर्देश पर कई टीमें बनाई गई है।

# सिटी सेंटर के निकट कूड़े के ढेर में लगी आग, दमकल की 10 गाड़ियां मौके पर

परिवहन विशेष न्यूज

नोएडा कोतवाली सेक्टर-24 क्षेत्र के सेक्टर-32 स्थित भूखंड में पड़े कूड़े के ढेर में सोमवार शाम आग लग गई। आग लगने की सूचना मिलते ही 4 फायर ब्रिग्रेड की गाड़ियों में 10 से ज्यादा दमकलकर्मी मौके पर पहुंचे जो आग पर काबू पाने की कोशिश में जुटे हैं। मुख्य अग्निशमन अधिकारी प्रदीप कुमार चौबे ने बताया कि इस भूखंड पर प्राधिकरण के उद्यान विभाग द्वारा कचरा एकत्र किया जाता है।

**नोएडा**। नोएडा कोतवाली सेक्टर-24 क्षेत्र के सेक्टर-32 स्थित भूखंड में पड़े कूड़े के ढेर में सोमवार शाम आग लग गई। आग लगने की सूचना मिलते ही 4 फायर बिग्रेड की गाड़ियों में 10 से ज्यादा दमकलकर्मी मौके पर पहुंचे जो आग पर काबू पाने की कोशिश में जुटे हैं।

मुख्य अग्निशमन अधिकारी प्रदीप कुमार चौबे ने बताया कि इस भूखंड पर प्राधिकरण के उद्यान विभाग द्वारा कचरा एकत्र किया जाता है। सोमवार शाम सूचना मिली कि कूड़े के ढेर में आग लग गई है। सूचना पर दमकल की चार गाड़ियों को भेजा गया। आग अधिक क्षेत्रफल में होने के चलते छह और गाड़ियां भेजी गईं। करीब 25 दमकलकर्मी फायर टेंडर की मदद से आग को बुझाने में जुटे हुए हैं, लेकिन आग इतनी विकराल है कि उसे बुझाने में समय लगेगा।

उनका कहना है कि यह आग स्वतः नहीं लगती, बल्कि जानबूझकर अज्ञात व्यक्ति द्वारा लगाई जाती है। पिछले वर्ष मई में भी इसी स्थान पर कूड़े के ढेर में आग लगी थी। जिसे 30 फायर टेंडर की मदद से करीब छह दिन में बुझाया गया था।

उनका कहना है कि आग जल्दी बुझाई जाए, इसके लिए पड़ोसी जिले गाजियाबाद, हापुड़, बुलंदशहर और मेरठ से भी फायर टेंडर मांगे गए हैं।

**एलिवेटेड रोड से दिखा भयंकर नजारा**

सोमवार शाम जब आग लगी तो वहां से कुछ किलोमीटर दूर एलिवेटेड रोड से ऐसा लग रहा था कि किसी बिल्डिंग यानि रिहायशी भवन में आग लगी है। एलिवेटेड रोड से गुजरने वाले लोग आग की लपटों और धुंए को देखकर हतप्रभ हो रहे थे। वह आगजनी की फोटो और वीडियो एक-दूसरे को साझा कर रहे थे। उन्हें लग रहा था कहीं बड़ी आगजनी की घटना हुई है, लेकिन कहां हुई है, इसकी उन्हें जानकारी नहीं थी।

# गाजियाबाद में बैन होगी खूंखार नस्ल के कुत्तों की ब्रीड, जानिए क्यों लिया गया ये फैसला

परिवहन विशेष न्यूज

कुत्तों के हिंसक हमलों के बढ़ते मामलों को देखते हुए उत्तर प्रदेश शासन की ओर से खूंखार कुत्तों की नस्लों के पालने प्रजनन और बिक्री पर प्रतिबंध लगाया है। ऐसे कुत्तों को शासन ने मानव जीवन के लिए खतरा मानते हुए निदेशक प्रशासन एवं पशुपालन विभाग की ओर से उत्तर प्रदेश के सभी जिलों के मुख्य पशु चिकित्साधिकारी आदेश जारी करते हुए इसका पालन कराने के निर्देश दिए हैं।

**गाजियाबाद**। कुत्तों के हिंसक हमलों के बढ़ते मामलों को देखते हुए उत्तर प्रदेश शासन की ओर से खूंखार कुत्तों की नस्लों के पालने, प्रजनन और बिक्री पर प्रतिबंध लगाया है। ऐसे कुत्तों को शासन ने मानव जीवन के लिए खतरा मानते हुए निदेशक प्रशासन एवं पशुपालन विभाग की ओर से उत्तर प्रदेश के सभी जिलों के मुख्य पशु चिकित्साधिकारी आदेश जारी करते हुए इसका पालन कराने के निर्देश दिए हैं। बैड डॉग की श्रेणी में आने वाले खूंखार क्रॉसब्रीड और पिटबुल, रॉटवीलर समेत करीब दो दर्जन नस्ल के कुत्ते शामिल हैं।

मानव जीवन के लिए खतरनाक मानी जा रहे कुत्तों में रॉटवीलर, पिटबुल, वुल्फ, रूसी शेफर्ड और अकित मस्टिफ आदि खूंखार नस्लों के कुत्तों के प्रजनन, पालन और बिक्री पर रोक लगाने के लिए शासन की ओर से डॉ. राजेंद्र सिंह निदेशक प्रशासन एवं पशुपालन विभाग ने 19 मार्च को पत्र के माध्यम से आदेश जारी किया है। इसमें तत्काल प्रभाव से इसका पालन करने के लिए निर्देशित किया है।

कई लोगों और पशु कल्याण संगठनों की ओर से खूंखार नस्ल के कुत्तों पर प्रतिबंध लगाने के साथ ही इन्हें पालतू जानवर के रूप में रखने पर प्रतिबंध लगाने की मांग की थी, जिसे सही मानते हुए केंद्र सरकार ने इसी माह सभी राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों को आदेश जारी कर प्रभावी करने के निर्देश दिए।

अब प्रदेश के बाद जिला पशुपालन विभाग की ओर से नगर निकायों और जिला पंचायत विभाग से इस आदेश को तत्काल प्रभाव से लागू कराने के लिए पत्र भेजा जा रहा है।

**इस नस्ल के कुत्तों के प्रजनन व पालन पर लगी रोक**

खूंखार नस्ल के मिश्रित एवं क्रासब्रीड कुत्तों में रॉटवीलर, पिटबुल टेरियर, वुल्फ, टोसा ईनू, अमेरिकन स्टेफोर्ड, फिला ब्रासी लीरो, डोगो अर्जेंटीनो, अमेरिकन बुलडॉग, बोरवेल, कांगल, मध्य एशियाई शेफर्ड (ओवचार्का), कोकेशियान शेफर्ड (ओवचार्का), दक्षिण रुसी शेफर्ड (ओवचार्का), टॉर्न जैक, सरप्लानिनेक, जापानी टोसा और अकिता, मस्टिफ (बोरबुल्स), टेरियर्स, रोडेशियन, रीजबैक, कैनारियों, अकबाश कुत्ता, मॉस्को गार्ड, कैन कोरो आदि नस्ल के कुत्ते रोक वाली सूची में शामिल हैं।

**नहीं करा सकेंगे प्रजनन**

शासन की ओर से खतरनाक नस्लों के कुत्तों के पालने, खरीद-बिक्री के साथ ही उनके प्रजनन पर भी पूरी तरह रोक लगाई गई है। कुत्ता प्रजनन कराने वाले अगर लाइसेंसी हैं और रोक के बावजूद वह इन नस्ल के कुत्तों की ब्रीडिंग कराते हैं तो उनका लाइसेंस निरस्त कर धंधे को बंद कराया जाएगा। भविष्य में उन्हें खरीद-बिक्री और ब्रीडिंग का लाइसेंस नहीं मिलेगा।

*खूंखार नस्ल के कुत्ते मानव जीवन के लिए खतरा हैं। ऐसे मामले आए हैं, जिनमें इन नस्लों के कुत्तों ने लोगों पर हमला कर या तो बुरी जख्मी किया या हमले में घायलों की मौत तक हो गई। ऐसे कुत्ते मालिक के बस से भी बाहर हो जाते हैं। इन कुत्तों के सार्वजनिक स्थल पर लाने की पाबंदी है। नियम का उल्लंघन करने वालों पर पशु क्रूरता निवारण अधिनियम के तहत कार्रवाई होगी।*

**-डॉ. एसपी पांडेय, जिला मुख्य चिकित्साधिकारी**

# लोकसभा चुनाव में ये लोग कर सकेंगे मतदान, यहां चेक करें अपना भी नाम; देखें अहम दस्तावेजों की सूची

लोकसभा चुनाव में मतदाता सूची में नाम होना अवाश्यक है। सूची में नाम होने पर ही व्यक्ति अपना मतदान कर सकेगा। अगर सूची में नाम है लेकिन मतदाता पहचान पत्र नहीं तो वह व्यक्ति वैकल्पिक पहचान पत्र से मतदान कर सकेगा। लोग अपने प्रदेश के चुनाव आयोग की वेबसाइट पर जाकर मतदाता सूची विधानसभा वार देख सकते हैं।

**गुरुग्राम**। लोकतंत्र के महापर्व में सभी का मतदान करना जरूरी है। चुनाव आयोग भी सभी लोगों से मतदान के दिन घर से निकलने और मतदान करने की अपील कर रहा है। गुरुग्राम के जिला निर्वाचन अधिकारी व उपायुक्त निशांत कुमार यादव ने कहा है कि लोकतंत्र के पर्व में मतदाता अपने मताधिकार का प्रयोग अवश्य करें। इसके लिए मतदाता यह सुनिश्चित कर लें कि उनका नाम मतदाता सूची में शामिल है या नहीं।

जिस मतदाता का नाम मतदाता सूची में है, केवल वही अपने मताधिकार का प्रयोग कर सकता है। किसी मतदाता का नाम मतदाता सूची में है, लेकिन उसके पास मतदाता पहचान पत्र नहीं है तो वह वैकल्पिक पहचान पत्र दिखाकर अपना वोट डाल सकता है। मतदाता के पास पुराना वोटर कार्ड है तो भी वह वोट डाल सकता है, बशर्ते कि उसका नाम उस क्षेत्र की मतदाता सूची में होना चाहिए।

**मतदाता सूची में नाम नहीं तो मतदान नहीं**

किसी मतदाता का नाम मतदाता सूची में नहीं है और वह वोट डालने के लिए मतदान केंद्र पर अपना आधार कार्ड या वोटर कार्ड या अन्य कोई पहचान पत्र दिखाता है तो उसे वोट डालने नहीं दिया जाएगा। कोई भी मतदाता केवल तभी वोट डाल सकता है जब उसका नाम मतदाता सूची में दर्ज हो।

**इन दस्तावेज से कर सकेंगे मतदान**

एपिक के अलावा मतदाता वैकल्पिक फोटो पहचान दस्तावेजों का उपयोग करके भी वोट डाल सकते हैं। इन दस्तावेजों में पासपोर्ट, ड्राइविंग लाइसेंस, केंद्रीय, राज्य सरकार, सार्वजनिक उपक्रमों या सार्वजनिक लिमिटेड कंपनियों द्वारा कर्मचारियों को जारी किए गए फोटोयुक्त सेवा पहचान पत्र, बैंक या डाकघर द्वारा जारी फोटोयुक्त पासबुक, पैन कार्ड, श्रम मंत्रालय द्वारा जारी स्मार्ट कार्ड, मनरेगा जॉब कार्ड, श्रम मंत्रालय की योजना के तहत जारी स्वास्थ्य बीमा स्मार्ट कार्ड, फोटोयुक्त पेंशन दस्तावेज और आधार कार्ड शामिल हैं।

**यहां देखें मतदाता सूची**

हरियाणा राज्य निर्वाचन आयोग की वेबसाइट ceoharyana.gov.in पर विधानसभा अनुसार मतदाता सूचियां अपलोड हैं, उसे डाउनलोड करके भी कोई व्यक्ति अपना नाम मतदाता सूची में चेक कर सकता है। इसके अलावा वोटर हेल्पलाइन नंबर- 1950 पर कॉल करके भी जानकारी हासिल कर सकता है।

# उत्तर प्रदेश में लोकसभा चुनावों के सात चरणों का चक्रव्यूह पार करना नहीं होगा आसान

अजय कुमार

2024 का चुनाव संग्राम भी फिर पश्चिम यूपी से शुरू होगा। शुरुआत में पश्चिमी यूपी की 8 लोकसभा सीटों पर चुनाव होंगे। पिछले लोकसभा चुनाव के बाद से यहां के राजनीतिक हालात में काफी बदलाव आया है, जिसका असर चुनाव में दिख रहा है।

उत्तर प्रदेश की 80 लोकसभा सीटों को लेकर पूरे देश मे कौतुहल दिखाई दे रहा है। लोकसभा सीटों के हिसाब से सबसे बड़े राज्य यूपी में मुकाबला त्रिकोणीय होता नजर आ रहा है। त्रिकोणीय मुकाबले में एक तरफ एनडीए के तले मोदी की 'सेना' जीत की हुंकार भर रही है तो दूसरी ओर राहुल गांधी के अगुवाई में 'इंडी' गठबंधन ताल ठोक रहा है। दोनों गठबंधनों में बस फर्क इतना है कि जहां एनडीए की ओर से मोदी पुनः प्रधानमंत्री पद के दावेदार हैं, वहीं इंडी गठबंधन ने कौन होगा पीएम पर पत्ते नहीं खोले हैं, लेकिन लगता यही है कि यदि इंडी गठबंधन के लिये सत्ता की राह बनी तो राहुल गांधी प्रधानमंत्री पद के सबसे बड़े दावेदार होंगे। खैर, अभी किसी निष्कर्ष पर पहुंचना सही नहीं है। कौन होगा अगल प्रधानमंत्री ? यह सात चरणों के मतदान के बाद 04 जून को पता चलेगा, जब वोटों की काउंटिंग होगी। इसी लिये फिलहाल तो सात चरणों के चक्रव्यूह को भेदने के लिये ही सभी पार्टियो मैदान में ताल ठोंक रही हैं। 19 और 26 अप्रैल को प्रथम चरण एवं द्वितीय चरण का मतदान होगा। इन दोनों चरणो में पश्चिमी यूपी की 16 सीटों पर वोटिंग होगी। प्रथम चरण और दूसरे चरण के मतदान में पश्चिमी उत्तर प्रदेश की क्रमशः आठ-आठ सीटों के उम्मीदवारों के भाग्य का फैसला होगा। 07 मई को भी तीसरे चरण में दस सीटों पर मतदान होगा इसमें भी दस में से पश्चिमी यूपी की चार सीटें शामिल होंगी। इसके बाद 13 मई को चौथे, 20 मई को पांचवें, 25 मई को छठे और 01 जून को सातवें चरण का मतदान होना होगा। शुरू के तीन चरणों में जो राजनैतिक जंग पश्चिमी यूपी से शुरू होगी वह चौथे और पांचवे चरण में रूहेलखंड, अवध की सीटों पर तो छठे और सातवें चरण में पूर्वांचल में पहुंच कर समाप्त हो जायेगी। चार जून को नतीजे आयेंगे।

2024 लोकसभा चुनावों की शुरुआत पश्चिमी यूपी की आठ लोकसभा सीटों पर से होगा। पहले चरण में चुनाव के लिए आठ सीटों में से, भाजपा ने 2014 के चुनावों में सभी सीटें जीती थीं। 2014 में पार्टी ने अकेले प्रदेश भर में 71 सीटें जीतीं थीं। जबकि एनडीए गठबंधन के पास कुल 73 सीटें थीं। 2019 के चुनाव में इन सीटों पर सपा-रालोद और बसपा गठबंधन के खिलाफ लड़ाई में बीजेपी का प्रदर्शन खराब रहा। उन्होंने 8 में से केवल तीन सीटें जीतीं। ऐसे में सपा और बसपा को पूर्वांचल में कई सीटें मिलीं, जबकि बीजेपी को पूरे प्रदेश में सिर्फ 62 सीटें मिलीं थीं।

2024 का चुनाव संग्राम भी फिर पश्चिम यूपी से शुरू होगा। शुरुआत में पश्चिमी यूपी की 8 लोकसभा सीटों पर चुनाव होंगे। पिछले लोकसभा चुनाव के बाद से यहां के राजनीतिक हालात में काफी बदलाव आया है, जिसका असर चुनाव में दिख रहा है। यह चुनाव क्षेत्र में एक प्रमुख व्यक्ति रालोद नेता जयंत चौधरी की स्थिति भी तय करेगा। केंद्रीय मंत्री संजय बालियान की हैट्रिक कोशिशों की परीक्षा होगी। यह चुनाव तय करेगा कि बीजेपी नेता वरुण गांधी का राजनीतिक भविष्य क्या होगा। यह चुनाव यह भी तय करेगा कि नखतौर विधायक ओम कुमार संसद में जा सकेंगे या नहीं। यह क्षेत्र किसान और जाट नेता अजीत सिंह के प्रभाव वाला माना जाता है। चाहे आप जीतें या हारें, जीतने वाला पक्ष हमेशा सोचता है कि उसका पलड़ा भारी है। अजीत को अपनी बदनामी की भारी राजनीतिक कीमत भी चुकानी पड़ी। यह चुनाव अजीत सिंह के बिना होगा। सत्ता पक्ष और विपक्ष दोनों की ओर से जयंत चौधरी को अजीत का उत्तराधिकारी बनाने की कोशिशें अंत तक जारी रहीं। आख़िरकार पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह को भारत रत्न देने की सत्ताधारी पार्टी की चाल सफल रही। पिछले चुनाव में जयंत जाट दलित मुस्लिम गठबंधन छोड़कर भारतीय जनता पार्टी में शामिल हो गए थे। यह चुनाव तय करेगा कि जयंत का फैसला कितना सही है।

2019 का लोकसभा चुनाव में जो सपा, बसपा और रालोद एक गठबंधन का हिस्सा थे, वह बिखर चुके हैं। बसपा अकेली चुनाव लड़ रही है तो रालोद ने बीजेपी का दामन थाम लिया है। इस बार पहले चरण की आठ सीटों में से चार पर सपा, तीन पर बसपा और एक पर रालोद को संघर्ष करना पड़ा। बसपा ने अपने हिस्से की तीनों सीटें (सहारनपुर, बिजनौर और नगीना) जीत लीं। सपा ने चार में से दो सीटें (मुरादाबाद और रामपुर) जीतीं। आरएलडी का खाता नहीं खुल सका। बीजेपी ने कैराना, मुजफ्फरनगर और पीलीभीत में सीटें जीती थीं।

बात आजम की चर्चा के बिना पूरी नहीं हो सकती है। प्रथम चरण में ही रामपुर की संसदीय सीट के लिये मुकाबला होना है। 2019 और उसके पहले के चुनाव में कभी समाजवादी पार्टी का मुस्लिम चेहरा माने जाने वाले आजम खान की रामपुर समेत कई सीटों पर जीत तय रहती थी। पिछले पांच वर्षों में कई उतार-चढ़ाव से गुजरने के बाद, आजम खान को जेल हुई, दोषी पाया गया और विधायक के रूप में अयोग्य घोषित कर दिया गया। उपचुनाव हुआ जिसमें बीजेपी के घनश्याम लोधी सांसद बने। इस बार भी रामपुर में जेल में बंद आजम के कहने पर ही सपा चल रही है, अब नतीजे बतायेंगे क्या आजम अभी भी यहां ताकतवर हैं या फिर आजम को वोटर साइड लाइन कर चुके हैं। पहले चरण में ही बिजनौर में भी चुनाव होगा। एसपी-बीएसपी-आरएलडी गठबंधन में 2019 में बिजनौर की एक सीट बीएसपी के खाते में थी और उसके उम्मीदवार मुल्क नागर ने चुनाव जीता था। इस बार अपने चुनाव प्रचार को तेज करने के लिए रालोद ने चंदन चौहान और सपा ने यशवीर सिंह को मैदान में उतारा है। इस बार 2019 में तीनों मित्र दलों के उम्मीदवार अलग-अलग एक-दूसरे से मुकाबला करेंगे।

पश्चिमी यूपी की एक और चर्चित सीट मुजफ्फरनगर भी सुखियों में है। यहां भी 19 अप्रैल को मतदान होगा। 2019 के लोकसभा चुनाव में यहां से केंद्रीय मंत्री संजीव बालियान और आरएलडी प्रमुख अजीत सिंह एक-दूसरे पर नजरें गड़ाए हुए थे। बालियान लगातार दूसरी बार जीते। अजीत सिंह अब नहीं रहे और बदली हुई परिस्थितियों में आरएलडी और बीजेपी एक साथ हैं। ऐसे में रालोद भी इस बार बलियान में अपनी ताकत लगाएगी। सपा ने पूर्व सांसद हरेंद्र मलिक को अपना उम्मीदवार बनाया है।

पिछले चुनाव में बसपा ने महागठबंधन के जरिए सहारनपुर सीट जीती थी। बसपा के हाजी फजलुर्रहमान ने भाजपा के राघव लखनपाल को हराकर चुनाव जीता। इस बार सपा-कांग्रेस गठबंधन में यह सीट कांग्रेस के खाते में चली गई हैं। इसी प्रकार से कैराना की सीट भी कम महत्वपूर्ण नहीं है। यहां से कभी बीजेपी के दिग्गज नेता हुकुम सिंह चुनाव लड़ा करते थे। उनकी मौत के बाद 2019 के चुनाव में बीजेपी के प्रदीप कुमार चौधरी ने एसपी की तबस्सुम बेगम को हराकर जीत हासिल की। इस चुनाव में सपा ने पूर्व सांसद मनूर हसन की बेटी इकरा हसन और तबसेम बेगम को अपना उम्मीदवार बनाया है। इकरा के छोटे भाई नाहिद हसन विधायक हैं। इसी तरह से नगीना संसदीय सीट पर पिछले चुनाव में बसपा के गिरीश चंद्र ने महागठबंधन से जीत हासिल की और सांसद बने। इस बार एसपी ने रिटायर जज मनोज कुमार को मैदान में उतारा है, जबकि बीजेपी ने नहटूर से विधायक ओम कुमार को मैदान में उतारा है। इस बार दोनों पार्टियों के नए उम्मीदवार एक दूसरे को टक्कर दे रहे हैं। पीतलनगरी मुरादाबाद में सपा के हसन ने बीजेपी के कंवर सोरौश कुमार को हराकर चुनाव जीता। एसपी-कांग्रेस गठबंधन में यह सीट एसपी के हिस्से में है और बीजेपी-आरएलडी गठबंधन में यह सीट बीजेपी के हिस्से में है। यहां समाजवादी पार्टी को हराना बीजेपी के लिये आसान नहीं होगा। प्रथम चरण की एक और पीलीभीत लोकसभा सीट से पिछला चुनाव बीजेपी के वरुण गांधी ने जीता था, लेकिन कुछ दिनों बाद उनका रवैया बदल गया। अक्सर देखा गया कि वे सरकार को खुद को कटघरे में खड़ा करके सवाल उठाते थे। अबकी से यहां लड़ाई काफी रोचक होती दिख रही है।

# होली पर्व की शास्त्रीय मान्यता

भारत में सालभर में कितने ही पर्व मनाए जाते हैं और हर पर्व के साथ कुछ कथा आख्यान जुड़े होते हैं। इनमें एक संदेश, एक सीख निहित होती है। होली का त्योहार भी इससे अछूता नहीं है, होली यों तो रंगो का पर्व माना जाता है, लेकिन होली पर्व की शास्त्रीय मान्यता है।

अतः आइए जानते हैं अहंकार पर आनंद की विजय के पर्व होली की शास्त्रीय मान्यता के बारे में-:

**हिरण्यकशिपु का अर्थ-:**

हिरण्यकशिपु ने ब्रम्हाजी को प्रसन्न किया और उनसे अनेकों वरदान प्राप्त कर स्वयं को अमर समझ लिया। हिरण्यकशिपु अहंकार का प्रतीक है। हिरण्य यानि धन या पैसा जिसे अपने धन पर अपनी संपत्ती पर अंहकार हो वह हिरण्यकशिपु होता है।

अर्थात कुछ लोग मेहनत व पुरुषार्थ के बल पर कुछ भौतिक उपलब्धियां प्राप्त कर लेते हैं, उसके बाद उन उपलब्धियों का अहंकार सातवें आसमान पर चला जाता है ऐसी प्रवृत्तियां हिरण्यकशिपु कहलाती है।

**प्रह्लाद का अर्थ-:**

प्रल्हाद हिरण्यकशिपु का पुत्र था, जो भगवान विष्णु का भक्त बना। प्रह्लाद दो शब्द से मिलकर बना है 'प्र' और आल्हाद, यहां आल्हाद का अर्थ है आनंद यदि इसमें 'प्र' जोड़ दिया जाए तो विशेष आनंद होता है। जिसने सतचित और आनंद को पहचान लिया और परमात्मा के भजन- किर्तन में, प्रभु की भक्ति में जिसे विशेष आनंद आता हो वह ?प्रह्लाद? है।

प्रह्लाद का जन्म ही भक्त और भगवान में एकीभाव करने के लिए हुआ था और उसमें सबसे बड़ा अवरोध, बाधक होता है अंहकार।

भक्त किसी से द्वेष नहीं करता, वह तो भक्ति में मस्त है परंतु यदि कोई उसे पीड़ा पहुंचाने का कार्य करता है तो परमात्मा अवतरित होकर भक्त द्रोही का नाश करते हैं। ऐसा भक्त प्रह्लाद की कथा में मिलता है।

**प्रह्लाद को मारने के विविध प्रयास-:**

विष्णु पुराण की कथा के अनुसार हिरण्यकशिपु ने प्रल्हाद को कितने ही कष्ट दिए। उसे पहाड़ से फेंका, धन दौलत मान प्रतिष्ठा पद आदि से उसे वंचित किया। हाथी से घसीटा गया। इसके बाद उसे होलिका के साथ आग में बैठाया। कथा के अनुसार हिरण्याक्ष ने अपनी बहन होलिका को प्रह्लाद को नष्ट करने की आज्ञा दी।

होलिका ये कुमति यानि अज्ञान का प्रतीक है, कुमति होलिका आग रूपी सत्य में आनंद रूपी प्रह्लाद को नष्ट करने के लिए बैठी तब कुमति यानि अज्ञान नष्ट हो जाता है और आनंद यानि सत्य ज्ञान बच जाता है। क्योंकि सत्य के सामने अज्ञान टिक नहीं पाता।

चूंकि होलिका को आग में नहीं जलने का वरदान था अर्थात अज्ञान को यह भ्रम रहता है कि उसका नाश कभी नहीं होगा। परंतु जब अज्ञान सच्चे ज्ञान को ढंक कर सत्य के सामने आता है तो स्वयं नष्ट हो जाता है और ज्ञान सुरक्षित रह जाता है। इतना हो जाने के बावजूद अहंकार की आंखे नहीं खुलतीं वह आनंद को नष्ट करने की प्रवृत्ति से बाज नहीं आता। गुरूकुल में भेज कर सच्चे ज्ञान को परावर्तित करने की चेष्ठा करता है परंतु ज्ञान तो सदा सत्य ही है।

**नरसिंह का प्राकट्य-:**

हिरण्यकशिपु ने जब जान लिया कि प्रह्लाद किसी दूसरे से नहीं नष्ट हो रहा है, तब वह स्वयं तलवार हाथ में लेकर उससे प्रश्न पूछने लगा कि बता तेरा भगवान कहां है। प्रह्लाद ने कहा वो तो सब जगह हैं, आनंद सभी जगह होता है केवल पहचानने की देर होती है। जब हिरण्यकशिपु ने पूछा कि क्या इस खंबे में भी तुझे भगवान दिखाई दे रहा हैं, इस पर प्रह्लाद ने कहा हां मुझे दिखाई दे रहा है। इसका अर्थ है कि भक्ति में, ज्ञान में इतनी दृढता रहनी चाहिए कि कोई कितना भी विचलित करें हम अपनी एकाग्रता नहीं छोड़नी चाहिए। खंभे पर तलवार से वार किया कि नरसिंह भगवान प्रकट हो गए।

**नरसिंह का अर्थ-:**

नरसिंह का अर्थ आधा मनुष्य आधा पशु, मानव में भी नर और सिंह दोनों गुण विद्यमान होते हैं। जब मनुष्य में मोह अहंकार ईष्या आदि दुगुर्ण बढ़ते हैं तब वह पशु बन जाता है और जब मानव के भीतर सत्गुणों की वृद्धि होती है तब वह नर से नारायण तक का रास्ता बना लेता है।

खंभे से ही नरसिंह प्रकट होते हैं और अहंकार का उनसे साक्षात्कार हुआ और अहंकार के सारे प्रपंचो को चूर- चूर कर उसका नाश किया।

अहंकार रूपी हिरण्याक्ष के मरते ही ब्रम्ह का साक्षात्कार होता है और ईश्वर की प्राप्ती हो जाती है। होली इसी ईश्वर की प्राप्ती के उपलक्ष्य में मनाया जाना वाला त्योहार है, जिसमें मनुष्य अपने आनंद की अभिव्यक्ति एक दूसरे पर रंग गुलाल उड़ा कर करता है, कि सप्तरंगी संसार के समस्त रंग उसी परमात्मा का ही रूप है। हर एक में उसी परमात्मा का ही दर्शन करें। इस प्रकार प्रह्लाद की कथा के अध्यात्म को जानकर हम हमारे जीवन में भक्ति के रंग को और मजबूत करें।

# Holi के रंगो में रंग गई है आपकी कार? परेशान होने की बजाय फॉलो करें ये स्टेप, पहले जैसी हो जाएगी गाड़ी

कार की बॉडी से कलर हटाने में आपको ज्यादा दिक्कत नहीं होगी। हालांकिज्यादा दिन होने के बाद रंग सूखने पर क्लीनिंग प्रोसेस बढ़ जाता है। इस ब्लॉग पोस्ट में हम कार पेंट पर पड़ने वाले सामान्य प्रकार के दाग और उनके कारणों की पहचान करेंगे। आइए कार के एक्सटीरियर पर पड़े कलर को हटाने का प्रोसेस क्रमवार जान लेते हैं।

परिवहन विशेष न्यूज

**नई दिल्ली।** पूरे देश में होली की धूम है। जगह-जगह रंग बिखेरे जा रहे हैं। लेकिन हर्ष-उल्लास के इस माहौल में कुछ चीजों को लेकर सावधान रहना भी जरूरी है। कहीं आपकी कार के साथ भी होली तो नहीं खेल ली गई? अगर ऐसा है तो 'बुरा ना मानें होली है'। आइए, जान लेते हैं कि कार के एक्सटीरियर पर लगे कलर को कैसे आसानी से छुड़ा सकते हैं?

**कैसे हटेगा होली का रंग?**

कार की बॉडी से कलर हटाने में आपको ज्यादा दिक्कत नहीं होगी। हालांकि, ज्यादा दिन होने के बाद रंग सूखने पर क्लीनिंग प्रोसेस बढ़ जाता है। इस ब्लॉग पोस्ट में हम कार पेंट पर पड़ने वाले सामान्य प्रकार के दाग और उनके कारणों की पहचान करेंगे। आइए, कलर हटाने के प्रोसेस को क्रमवार जान लेते हैं।

सबसे पहली कार को साफ पानी से धुलें।

पानी से धुलाई के बाद अगर कलर बचा रहता है, तो वॉश शैंपू का इस्तेमाल करें।

शैंपू लगाने के बाद जिस जगह पर कलर लगा है, वहां हल्के हाथो से रगड़कर साफ करें।

इतना करने के बाद कार को फिर से साफ पानी से धुलें और आपकी कार चमक जाएगी!

**जिद्दी दागों को ऐसे भगाएं**

ऊपर बताई गई प्रोसेस के बाद भी अगर आपकी गाड़ी पर पड़े कलर का दाग नहीं छूटता है, तो आप व्हाइट विनेगर की मदद ले सकते हैं। विनेगर के सफाई करते समय इसे कम मात्रा में ही यूज करें, नहीं तो पेंट को भी नुकसान पहुंच सकता है।

**भारी पड़ सकती है ये गलती**

दाग को हटाने के लिए हार्श केमिकल का यूज ना करें, इससे कार की पेंट भी खराब हो सकती है। इसके अलावा गंदी कार पर वैक्स या पॉलिश का उपयोग करने से कार के ऊपर दूषित कण चिपक सकते हैं, जिससे पेंट सरफेस को नुकसान हो सकता है।

## 1 लीटर फ्यूल में कितनी चलती है आपकी गाड़ी? ऐसे निकालें रियल वर्ल्ड माइलेज टेस्ट

गाड़ी का माइलेज टेस्ट करने के लिए सबसे पहले उसका टैंक फुल कराएं। टैंक फुल कराते समय ध्यान रखें कि फ्यूल पूरा ब्रिम तक आ गया है। फिर टैंक फुल करान से पहले कम से कम 250-300 किमी ड्राइव करने पर आपको बेहतर रिजल्ट मिलेंगे। माइलेज निकालने का फॉर्म्युला सिंपल है- Kms driven/ Fuel consumed. आइए पूरी प्रोसेस जान लेते हैं।

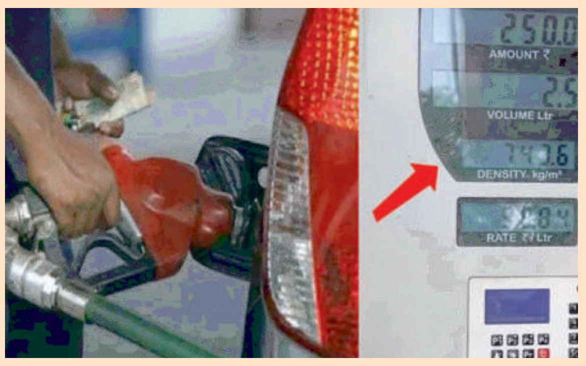


**नई दिल्ली।** 'कितना देती है?', कार खरीदते समय ग्राहक का सबसे पहला सवाल यही होता है। ऑटोमेकर भी कस्टमर के इस सवाल को समझते हुए गाड़ियों की फ्यूल एफिशियंशी के आंकड़े ARAI से सर्टिफाई कराते हैं। हालांकि, कई लोग इससे संतुष्ट नहीं हैं। आइए, खुद से गाड़ी का रियल माइलेज निकालने की स्टेप-बाय-स्टेप प्रोसेस जान लेते हैं।

**टैंक फुल कराएं**

गाड़ी का माइलेज टेस्ट करने के लिए सबसे पहले उसका टैंक फुल कराएं। टैंक फुल कराते समय ध्यान रखें कि फ्यूल पूरा ब्रिम तक आ गया है, क्योंकि ऑटो कट सिस्टम अलग-अलग नोजल के हिसाब से बदल जाता है। टैंक में गए टोटल फ्यूल का ध्यान रखें और अगली स्टेप की ओर बढ़ जाएं।

**ट्रिप रीसेट करें**

टैंक फुल होने के बाद आपको गाड़ी के अंदर आना है। फ्यूल टैंक ब्रिम तक भर जाने के बाद गाड़ी के इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर पर ट्रिप मीटर को जीरो पर रीसेट कर दें।

**गाड़ी चलाएं**

फ्यूल टैंक को पूरी तरह भरने और ट्रिप मीटर को रीसेट करने के बाद गाड़ी चलाना शुरू करें। रिफ्यूलिंग से पहले कम से कम 250-300 किमी ड्राइव करने पर आपको बेहतर रिजल्ट मिलेंगे।

**स्पीड लिमिट और सड़क का ध्यान रखें**

अपनी 250-300 किमी तक की ड्राइव में गाड़ी को रह कंडीशन में चलाने की कोशिश करें। इसके साथ स्पीड लिमिट भी फोलो करना जरूरी है।

**माइलेज निकालें**

ट्रिप पूरी करने के बाद कोशिश करें कि गाड़ी को उसी फ्यूल स्टेशन पर ले आएं, जहा पहले इसे रिफ्यूल कराया था। अब यहां आकर उसी नोजल से फ्यूल टैंक को ब्रिम तक भराएं। अभी जितना फ्यूल डाला गया उसे अपने पास नोट कर लें।

## क्या आप अपनी कार के लिए नया टायर खरीद रहे हैं? जानें कुछ बेहद जरूरी बातें

एक कार कई तरह के पुर्जों से मिलकर बनी होती है। जिसमें एक छोटा से स्क्रू से लेकर मेटल का बड़ा टुकड़ा और टायर शामिल होते हैं। जबकि हम अक्सर कई महत्वपूर्ण वाहन पार्ट्स की कार्यक्षमता की जांच करते हैं। लेकिन रेगुलर निरीक्षण के दौरान, हम कुछ बुनियादी बातों को नजरअंदाज कर देते हैं। कारों के सबसे महत्वपूर्ण लेकिन सबसे ज्यादा अनदेखे कंपोनेंट्स में से एक टायर हैं। टायर किसी वाहन के पैरों की तरह होते हैं और सड़क की सतह और वाहन को जोड़ने वाला एकमात्र पार्ट होता है। खराब या खराब गुणवत्ता वाला टायर बड़ी परेशानी का कारण बन सकता है। और यहां तक कि अन्य वाहनों और सवारों और पैदल चलने वालों के जीवन के लिए भी खतरा बन सकता है।

टायर की लाइफ मौसम, सड़क की स्थिति, ड्राइविंग की आदत जैसी कई चीजों के आधार पर अलग-अलग हो सकती है। अगर आपको लगता है कि आपके टायर की कार्यक्षमता खराब है और उसे बदलने की जरूरत है। तो यहां हम आपको बता रहे हैं कि एक नया टायर सेट खरीदते समय किन अहम बातों को ध्यान में रखना चाहिए।

**सही साइज चुनें**

वाहन के परफॉर्मेंस और सुरक्षा के लिए सही साइज का टायर लेना जरूरी है। आमतौर पर, टायर का साइज उसके साइडवॉल पर लिखा होता है। इसलिए, यदि आप टायरों का नया सेट खरीदने जा रहे हैं, तो जानकारी के लिए अपने वाहन के मौजूदा टायरों की जांच करें। वाहन के ओनर्स मैनुअल और कार डोर जैम पर भी टायर के साइज दर्ज रहते हैं। नए टायर खरीदने से पहले आप जानकारी के लिए उन्हें भी देख सकते हैं।

**मैन्युफेक्चरिंग की तारीख देखें**

यहां तक कि अगर आप एक ऐसा टायर खरीद रहे हैं जो बिल्कुल नया दिखता है, तो भी उस पर छपी निर्माण की तारीख जरूर देखें। कार के टायर रबर से बने होते हैं जो समय के साथ खराब हो जाते हैं। खासकर भारतीय मौसम जैसी गर्म जलवायु में ये और भी तेजी से खराब होते हैं। इसलिए, टायर खरीदते समय मैन्युफेक्चरिंग की तारीख की जांच करना महत्वपूर्ण है। DOT से शुरू होने वाले लेटल सीक्वेंस (अक्षर अनुक्रम) को चेक करें जो उस सप्ताह और साल को बताता है जब टायर का निर्माण किया गया था।

**बदलने का सही समय जानिए**

टायरों की रेगुलर चेकिंग वाहन के बुनियादी रखरखाव का एक हिस्सा है और यह बहुत महत्वपूर्ण भी है। गाड़ी निकालने से पहले उसके टायरों की गहराई को नियमित रूप से जांचें। साथ ही, टायरों की सतह पर असमान टूट-फूट की जांच करें। सुनिश्चित करें कि टायर निर्माता द्वारा सुझाए गए एयर प्रेशर के अनुसार पूरी तरह से फुले हुए हैं। यदि आप कोई असमान टूट-फूट या उथले चलन की गहराई देखते हैं। तो इसे एक तकनीशियन के पास ले जाने और जांचने की सलाह दी जाती है कि क्या इसे बदलने की जरूरत है। कुछ पैसे बचाने के लिए ऐसे छोटे संकेतों को नजरअंदाज करना परफॉर्मेंस और वाहन की सुरक्षा के मामले में आपको बहुत महंगा पड़ सकता है।

## भारतीयों को पसंद आ रही इलेक्ट्रिक कारें, इलेक्ट्रिक दोपहिया के मुकाबले ढाई गुना ज्यादा ग्रोथ

भारतीय बाजार में इलेक्ट्रिक कारों की मांग में लगातार बढ़ोतरी हो रही है। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक इलेक्ट्रिक दोपहिया वाहनों की ग्रोथ के मुकाबले Electric Car की ग्रोथ ढाई गुना से भी तेज रफ्तार में बढ़ रही है। देश के इलेक्ट्रिक वाहन के बाजार में किस तरह से कारों की मांग में बढ़ोतरी दर्ज की जा रही है। आइए जानते हैं।

**नईदिल्ली।** देश में Electric Car की मांग काफी तेजी से बढ़ रही है। कई कंपनियों की ओर से इलेक्ट्रिक सेगमेंट में कई कारों को ऑफर किया जाता है। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक इलेक्ट्रिक दोपहिया वाहनों के मुकाबले इलेक्ट्रिक कारों की बिक्री ढाई गुना से भी ज्यादा तेजी से बढ़ रही है।

**मौजूदा वित्त वर्ष में कितनी हुई बिक्री**

मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक इस वित्तीय वर्ष के दौरान देशभर में इलेक्ट्रिक कारों की बिक्री का आंकड़ा 1.02 लाख यूनिट्स तक पहुंच सकता है। साल 2022-23 में कुल 60910 यूनिट्स इलेक्ट्रिक कारों की बिक्री हुई थी। जबकि इस वित्तीय वर्ष में इलेक्ट्रिक दोपहिया वाहनों की बिक्री भी 7.6 लाख यूनिट्स से ज्यादा हो सकती है। जो पिछले वित्तीय वर्ष के मुकाबले सिर्फ 26 फीसदी ज्यादा है। पिछले वित्तीय वर्ष में इलेक्ट्रिक कारों की बिक्री 173 और इलेक्ट्रिक दोपहिया वाहनों की बिक्री 175 फीसदी तक बढ़ी थी।

**फरवरी में कैसी थी बिक्री**

फाडा की ओर से जारी की गई रिपोर्ट के मुताबिक देशभर में फरवरी 2024 के दौरान कुल 7231 यूनिट्स इलेक्ट्रिक कारों की बिक्री हुई है। ईयर ऑन ईयर बेसिस पर यह बढ़ोतरी 51.72 फीसदी की है।

**क्यों बढ़ी बिक्री**

दुनिया की सबसे बड़ी बैटरी कंपनी सीएटीएल के मुताबिक फरवरी महीने तक इलेक्ट्रिक कारों की बैटरी की कीमत करीब 50 फीसदी तक कम हो गई है। कीमत में कमी आने के कारण उत्पादन लागत में कमी आई है। जिसके बाद भारत में भी टाटा जैसी कंपनियों की ओर से अपनी इलेक्ट्रिक कारों की कीमत में कमी की है। जिसके बाद ग्राहकों के लिए इलेक्ट्रिक कार खरीदना और आकर्षक हो गया है।

**भारत में मिलती हैं ये इलेक्ट्रिक कारें**

भारत में टाटा मोटर्स की ओर से पंच, टियागो, टिगोर, नेक्सन जैसी इलेक्ट्रिक कारों और एसयूवी को ऑफर किया जाता है। वहीं एमजी मोटर्स की ओर से देश की सबसे सस्ती इलेक्ट्रिक कार के तौर पर Comet और प्रीमियम इलेक्ट्रिक एसयूवी ZS EV को ऑफर किया जाता है। वहीं देश में सिट्रॉएन ईसी3, बीवाईडी Atto3 और Seal, मर्सिडीज ईक्यूएस, ऑडी ई-ट्रॉन, बीएमडब्ल्यू i7, वोल्वो XC रिचार्ज, हुंडई Ioniq5 और किआ EV6 जैसी बेहतरीन इलेक्ट्रिक कारों को ऑफर किया जाता है।

## किफायती दामों में लॉन्च होंगी ये 3 जबरदस्त इलेक्ट्रिक कार, यहां देखिए लिस्ट

Electric Cars की लगातार बढ़ रही मांगो के बीच कई नए प्रोडक्ट आने वाले हैं। अपने इस लेख में हम आपके लिए टॉप-3 अफोर्डेबल ईवी की लिस्ट लेकर आए हैं। Maruti Suzuki Mahindra और Hyundai जैसी देश की पॉपुलर कार निर्माता कंपनियों की ओर से नई निकट भविष्य में EVs लॉन्च की जाएंगी। आइए अपकमिंग Maruti evx Mahindra XUV300 ev Hyundai Exter EV के बारे में जान लेते हैं।

**नई दिल्ली।** इंडियन ऑटो मार्केट में लगातार बढ़ रही Electric Cars की मांग के बीच कई नए प्रोडक्ट लॉन्च के लिए तैयार है। Tata, Mahindra और Hyundai जैसी देश की पॉपुलर कार निर्माता कंपनियों की ओर से नई निकट भविष्य में EVs लॉन्च की जाएंगी। आइए, इनके बारे में जान लेते हैं।

**Maruti Suzuki eVX**

Maruti Suzuki eVX इस साल के अंत में अपनी शुरुआत करेगी और ये 2025 की शुरुआत में एक टोयोटा सिबलिंग को जन्म देगी। मिड साइज की इ इलेक्ट्रिक एसयूवी में संभवतः दो बैटरी और FWD/AWD कॉन्फिगरेशन मिलेंगे और दावा किया गया रेंज 500 किमी से अधिक होने की उम्मीद है।

**Mahindra XUV3OO EV**

Mahindra XUV3OO फेसलिफ्ट के साथ यह भी उम्मीद है कि इसका इलेक्ट्रिक वर्जन भी पेश किया जाएगा। इंडियन मार्केट में ये सीधे तौर पर Tata Nexon.ev को टक्कर देगी। XUV 300 EV महिंद्रा के फ्यूचर प्लान का एक बड़ा प्लेयर होने वाली है। इसके बारे में ज्यादा जानकारी नहीं है, लेकिन हमें उम्मीद है कि इसमें Mahindra XUV4OO जैसा ही ड्राइवट्रेन होगा। कीमतें भी काफी कंपटीटिव होने वाली हैं।

**Hyundai Exter EV**

टाटा की तरह हुंडई भी इंडियन मार्केट में ICE इंजन वाली कारों को EV अवतार में पेश करने के लिए तैयार है। Exter ICE के लॉन्च के ठीक बाद Exter EV का एक संभावित टेस्टिंग मॉडल देखा गया है।

दक्षिण कोरिया में हुंडई कैस्पर ईवी पर काम कर रही है और हम एक्सटर ईवी पर समान विशिष्टताओं की उम्मीद कर सकते हैं। इसे 300 किमी से 350 किमी क्लेम्ड रेंज वाला 40kWh बैटरी पैक दिया जा सकती है। हम अगले दो वर्षों में एक्सटर ईवी के लॉन्च की उम्मीद कर सकते हैं।

प्रतीकात्मक तस्वीर

# मदरसा शिक्षा पर गहराते संकट के मायने को ऐसे समझिए

कमलेश पांडे

किसी भी धर्मनिरपेक्ष देश में अलग-अलग धार्मिक मान्यताओं व परम्पराओं को संरक्षण और बढ़ावा देना कोई अनुचित बात नहीं है। लेकिन जब सत्ताधारी दल द्वारा वोट बैंक के नजरिए से किसी धर्म को शह दिया जाए और किसी धर्म को नजरअंदाज किया जाए, तो यह गलत बात है...

हाल ही में इलाहाबाद उच्च न्यायालय, प्रयागराज ने यूपी मदरसा शिक्षा बोर्ड अधिनियम, 2004 को असंवैधानिक करार दिया और कहा कि यह कानून धर्मनिरपेक्षता के सिद्धांतों के खिलाफ भी है, जो संविधान के मूल ढांचे का अंग है।

किसी भी धर्मनिरपेक्ष देश में अलग-अलग धार्मिक मान्यताओं व परम्पराओं को संरक्षण और बढ़ावा देना कोई अनुचित बात नहीं है। लेकिन जब सत्ताधारी दल द्वारा वोट बैंक के नजरिए से किसी धर्म को शह दिया जाए और किसी धर्म को नजरअंदाज किया जाए, तो यह गलत बात है। वहीं, विपक्षी दल द्वारा भी ऐसा किया जाना ठीक नहीं है। इस नजरिए से भारतीय धर्मनिरपेक्षता सदैव शक के कठघरे में खड़ा रहती आई है।

खासकर धार्मिक अल्पसंख्यकों के लिए जो कुछ पक्षपाती प्रावधान वक्त दर वक्त तय किए गए, वो जब न्यायालय के समक्ष किसी जनहित याचिका के माध्यम से प्रस्तुत किये जाते हैं तो तर्क और नियमन की कसौटी पर कदापि नहीं टिक पाते। कतिपय मामलों में बहुसंख्यक धर्मावलंबियों को भी जब टारगेट करने की कोशिश की गई, तो वो प्रावधान भी कोर्ट में टिक नहीं पाए।

हाल ही में इलाहाबाद उच्च न्यायालय, प्रयागराज ने यूपी मदरसा शिक्षा बोर्ड अधिनियम, 2004 को असंवैधानिक करार दिया और कहा कि यह कानून धर्मनिरपेक्षता के सिद्धांतों के खिलाफ भी है, जो संविधान के मूल ढांचे का अंग है। यही वजह है कि हाई कोर्ट ने राज्य सरकार को योजना बनाकर इन मदरसों में पढ़ने वाले छात्रों को बुनियादी शिक्षा व्यवस्था में समायोजित करने का निर्देश दिया। इससे एक बात साफ हो चुकी है कि अब उत्तरप्रदेश में सरकारी सहायता प्राप्त 560 से अधिक मदरसों पर ताला लगेगा।

उल्लेखनीय है कि कोर्ट में याचिकाकर्ता अंशुमान सिंह राठौड़ ने मदरसा बोर्ड की संवैधानिकता को चुनौती देते हुए मदरसों का प्रबंधन केंद्र व राज्य सरकार के स्तर पर अल्पसंख्यक कल्याण विभाग की ओर से किये जाने के औचित्य पर सवाल उठाए थे। वहीं, याचिका का विरोध करते हुए राज्य सरकार ने कोर्ट में कहा कि इसमें कोई संदेह नहीं है कि बोर्ड धार्मिक शिक्षा दे रहा है, पर राज्य सरकार को ऐसी शिक्षा देने का संवैधानिक अधिकार है। धार्मिक शिक्षा और निर्देश देना, वर्जित या अवैध नहीं है। हां, यह बात अलग है कि ऐसे धार्मिक शिक्षा के लिए अलग से बोर्ड जरूरी है, जिसमें उसी धर्म के लोग हों।

बता दें कि इस मामले में याचिकाकर्ता के वकील ने दलील दी कि मदरसा अधिनियम धर्मनिरपेक्षता के सिद्धांतों व शिक्षा के अधिकार कानून का उल्लंघन करता है, जो संविधान की मूल संरचना है। उन्होंने सवालिया लहजे कहा कि मदरसों में इसे दीनी तालीम तक सीमित कर दिया गया है, जो छात्रों के मौलिक अधिकारों का हनन करता है। वहीं, बोर्ड में सिर्फ मुस्लिम सदस्यों को शामिल किया गया, जबकि ऐसा नहीं होना चाहिए। समझा जाता है कि इसी परिप्रेक्ष्य में उपर्युक्त न्यायिक आदेश मिला है।

इस मामले में जस्टिस विवेक चौधरी व जस्टिस सुभाष विद्यार्थी की खण्डपीठ ने अपना फैसला सुनाते हुए इस कानून को अधिकार से परे (अल्ट्रावायर्स) भी बताया। इसलिए सरकार का यह फर्ज बनता है कि ऐसे सभी प्रावधानों की पड़ताल करे और जनहित में सबकी एकरूपता सुनिश्चित करे। ऐसा किया जाना भारतीय धर्मनिरपेक्षता के हित में होगा। हालांकि, आल इंडिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड के सदस्य मौलाना खालिद रशीद फरंगी महली ने कहा, आदेश को सुप्रीम कोर्ट में चुनौती देंगे।

वहीं, यूपी मदरसा शिक्षा बोर्ड के चेयरमैन इफ्तिखार अहमद जावेद ने कहा है कि फैसले का अध्ययन करने के बाद अगले कदम पर फैसला होगा। इस बात में कोई दो राय नहीं कि 20 साल बाद इस पकानून को असंवैधानिक करार दिया गया है। इसमें कहीं चूक हुई है। हमारे वकील कोर्ट के समक्ष मामले को सही तरीके से नहीं रख सके। उन्होंने कहा, मदरसे बंद होंगे तो कई शिक्षक बेरोजगार हो जाएंगे।

इस प्रकार स्पष्ट है कि उत्तरप्रदेश मदरसा शिक्षा बोर्ड कानून को लेकर इलाहाबाद हाई कोर्ट के आदेश के बाद अगर अनुदानित मदरसे बन्द कर दिए जाते हैं तो वहां कार्यरत करीब 10,200 शिक्षक एवं शिक्षणेत्तर कर्मचारियों की रोजी-रोटी पर संकट खड़ा हो जाएगा। बता दें कि वर्तमान में मदरसा शिक्षा परिषद से मान्यता प्राप्त तहतानिया कक्षा 1 से 5, फौकानिया कक्षा 5 से 8 और आलिया व उच्च आलिया स्तर यानी हाई स्कूल या इससे ऊपर के लगभग 16,460 मदरसे हैं। जिनमें मुंशी मौलवी हाई स्कूल समकक्ष, आलिम इंटर समकक्ष, कामिल स्नातक और फाजिल परास्नातक के समकक्ष पढ़ाई होती है।

उल्लेखनीय है कि इन मदरसों को संचालित करने के लिए वर्ष 2004 में बने मदरसा एक्ट को हाई कोर्ट ने असंवैधानिक करार दिया है। जिसके बाद मदरसों में पढ़ाने वाले शिक्षकों व कर्मचारियों की नौकरी पर तलवार लटक गई है। वहीं, इस बारे में मदरसा शिक्षा परिषद की रजिस्ट्रार डॉ प्रियंका अवस्थी ने बताया कि मदरसा बोर्ड से मान्यता प्राप्त 16,460 मदरसों में 13 लाख 83 हजार 107 विद्यार्थी शिक्षा हासिल कर रहे हैं। वहीं, इनमें शामिल 560 अनुदानित मदरसों में 1 लाख 92 हजार 317 विद्यार्थी शिक्षा हासिल कर रहे हैं।

लिहाजा, हाई कोर्ट के आदेश के बाद मदरसों के शिक्षा पा रहे इन 13 लाख से अधिक विद्यार्थियों के भविष्य पर अंधेरा छा गया है। गौरतलब है कि उत्तरप्रदेश में 25,000 मदरसे हैं। जिनमें मदरसा बोर्ड से 16,512 को मान्यता प्राप्त है। उनमें से 560 को सरकारी सहायता मिलती है। वहीं, लगभग 8500 मदरसे बिना मान्यता प्राप्त हैं। कहना न होगा कि उच्च न्यायालय का यह फैसला ऐसे वक्त पर आया है, जब राज्य सरकार के निर्देश पर एसआईटी राज्य में अवैध मदरसों की जांच कर रही है।

सर्वविदित है कि इन मदरसों को विदेश से मिलने वाली आर्थिक मदद की जांच के लिए पिछले साल अक्टूबर में विशेष जांच दल (एसआईटी) का गठन किया गया था। इसकी जांच में अबतक 13000 मदरसे अवैध पाए गए हैं, जिन्हें बन्द करने की तैयारी चल रही है। बहरहाल, उच्च न्यायालय के ताजा आदेश से सरकार के दृष्टिकोण को बल मिला है। बावजूद इसके, इस मामले में फूंक-फूंक कर कदम उठाए जाने चाहिए, ताकि सम्प्रदाय विशेष में कोई गलत संदेश नहीं जाए। बेहतर तो यह होगा कि ऐसे सभी कानूनों की जांच राष्ट्रीय स्तर पर की जाए और समय रहते ही उन्हें समनुरूप बनाया जाए, ताकि एक धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र में धार्मिक वैमनस्यता विकसित नहीं हो पाए।

## संपादक की कलम से

## सरकार ही जज, अदालत

बीते दिनों केंद्रीय सूचना-प्रसारण मंत्रालय ने कुछ संदिग्ध और सवालिया न्यूज वेब पोर्टल, निजी न्यूज चैनलों पर पाबंदी लगाई थी। आरोप पुराने ही थे कि वे 'फेक न्यूज', 'भ्रामक सामग्री' और 'झूठी खबरें' परोस रहे थे। सरकार इसे 'आपराधिक कृत्य' मानती है। बीते एक अंतराल से ऐसी पाबंदियां ही चस्पा नहीं की गईं, बल्कि कुछ पत्रकारों, संपादकों, प्रकाशकों को भी, कड़ी कानूनी धाराओं में, जेल भी भेजा गया है। बहरहाल वे मामले अदालतों के विचाराधीन हैं। बेशक फेक न्यूज लंबे समय से एक गंभीर समस्या बनी हुई है। ऐसी खबरों या सूचनाओं से हिंसा भडक़ी है, दंगे हुए हैं, देश के खिलाफ युद्ध सरीखे अभियान तक छेड़े गए हैं। फर्जी खबरें चुनावों को भी एक निश्चित सीमा तक प्रभावित करती रही हैं। काली भेड़ें तो हर समाज और व्यवस्था में होती हैं, लेकिन उनकी आड़ में पत्रकारिता और खासकर अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को कुचलने की कोशिशें नहीं होनी चाहिए। दरअसल फेक न्यूज, भ्रामक खबरों, झूठी सूचनाओं के संदर्भ में भारत सरकार ही जज, ज्यूरी और कार्यान्वित करने वाली ईकाई की भूमिका निभाना चाहती है। गौरतलब है कि अप्रैल, 2023 में सूचना प्रौद्योगिकी एवं इलेक्ट्रॉनिक्स मंत्रालय ने 2021 आईटी नियमों में कुछ संशोधनों को अधिसूचित किया था, ताकि एक 'फैक्ट चेकिंग यूनिट' बनाई जा सके। वह यूनिट ऑनलाइन सामग्री, खबरों, अन्य सूचनाओं को प्रभावी रूप से सेंसर कर सके। यदि केंद्र सरकार की किसी नीति, काम, फैसले को 'फर्जी' या 'भ्रामक' करार दिया गया हो, तो उस पर कार्रवाई की जा सके।

जब ऐसी अधिसूचना जारी की गई थी, तब केंद्रीय मंत्री राजीव चंद्रशेखर ने कहा था कि यदि लोगों के दिमाग में कोई संदेह होगा या मन में कोई शंका होगी कि सरकार के आधार पर शक्तियों का दुरुपयोग किया गया है, तो उसे जरूर संबोधित किया जाएगा। इसी सप्ताह केंद्र सरकार ने 'फैक्ट चेकिंग यूनिट' को, 'प्रेस सूचना ब्यूरो' के तहत एक वैधानिक संस्था के तौर पर अधिसूचित किया है। प्रेस सूचना ब्यूरो सरकारी विज्ञप्ति या कैबिनेट की कोई सूचना मीडिया तक पहुंचाने वाली संस्था है। हालांकि संशोधित नियमों की संवैधानिकता को सर्वोच्च अदालत में चुनौती दी गई है, फिर भी यह वैधानिक व्यवस्था करने से स्पष्ट है कि केंद्रीय मंत्री का आश्वासन बेमानी है। अदालत ने सरकारी प्रयास पर रोक लगा दी है, लेकिन बुनियादी समस्या यथावत है कि सूचना-प्रसारण मंत्रालय के पीआईबी के तहत एक संस्था को सेंसरशिप की ताकत दी गई है। दरअसल सरकार ही संविधान, जज, अदालत, फैसले को लागू करने वाली ईकाई और मौलिक अधिकारों की पैरोकार, सब कुछ बन जाना चाहती है। सरकार ही प्रत्येक स्थिति की व्याख्या करेगी कि क्या सही है, सच है और क्या फर्जी है? फर्जी, भ्रामक, झूठी खबर या सूचना क्या है, उन्हें लेकर नियमों में बिल्कुल भी स्पष्टता नहीं है। वे परिभाषित भी नहीं हैं। अखबार में तो संपादक ही अपने विवेक से खबरें तय करता है, लेकिन ऑनलाइन की दुनिया अभी निरंकुश है।

वहां अधिकतर नौसीखिए, गैर-पेशेवर लोग ही सक्रिय हैं। कई अनुभवी पत्रकार सेवानिवृत्ति के बाद अपने चैनल चला रहे हैं। वहां सरकार वैचारिकता की आड़ में पत्रकारों को दबोचती रही है, लिहाजा पीआईबी में नई व्यवस्था को लेकर 'एडीटर्सगिल्ड ऑफ इंडिया' ने भी असंतोष और नाराजगी जताई है। इनमें अधिकतर पत्रकार ऐसे हैं, जिन्हें पीआईबी ने दशकों तक मान्यता दिए रखी। यह मान्यता कई संदर्भों में आज भी बरकरार है। बहरहाल एक बार किसी खबर को भ्रामक या फर्जी घोषित कर दिया गया, तो सोशल मीडिया, मीडिया प्लेटफॉर्म और इंटरनेट सेवा प्रदाता कंपनियों को भी उसे अपने मंच से हटाना पड़ेगा। बुनियादी सवाल यह है कि सत्यता और फर्जीपन को तय करने का दायित्व किस पर होना चाहिए? सरकार अकेली ही यह तय नहीं कर सकती। न्यायपालिका और मौजूदा आपराधिक, सिविल कानून भी हमारी व्यवस्था के निर्णायक अंग हैं, जो न्यायिक तौर पर फर्जी और झूठी खबरों से निपट सकते हैं।

## राय

## जेब फिर भी खाली

अवांछित घटनाक्रम की वांछित राजनीति ने अब हिमाचल की नीयत में अस्थिर सरकारों का खोट भर दिया है। अस्थिरता न होती तो जनादेश की ताकत से राज्यसभा में कांग्रेस का एक और सांसद प्रवेश कर गया होता, मगर इस ताजपोशी के सबूत खूंखार हो रहे हैं। कांग्रेस की जेब जहां लुटी है वहां जनादेश की दौलत भी लुटी है, लेकिन हम दोनों पाटों में सियासत का पुण्य-पाप नहीं चुन सकते। अगर भाजपा की हालत व देश की राजनीति पर पूर्व केंद्रीय मंत्री व पार्टी के वरिष्ठ नेता शांता कुमार की आंखें भर रही हैं, तो यह मौजूदा दौर की तनहाई में गुम होते सिद्धांतों की अंतिम फरियाद होगी। हम किस जश्न में शरीक हों। कांग्रेस से किनारा कर गए छह विधायकों, उनके साथ पार्टी द्वारा किए गए कथित सुलूक या भाजपा में शामिल हो गए नौ पूर्व विधायकों की नई पारी पर एतबार करें। जो भी हो सियासत का मुलम्मा उतर रहा है। पल भर के लिए हम गिन लेते हैं कि किसी एक के कदम से दूसरी पार्टी को लाभ हो गया, लेकिन अगले ही पल घाटे के समीकरण देख लेते हैं। आसमान में जो उड़ रहे वे कटी पतंगें, हमारी डोर से कैसे जुड़ पाएंगी। कौन सा वादा और कौन सा विवाद इस कशमकश में जीत पाएगा, यहां चारों ओर रस्सियों से बंधे मजमून नजर आते हैं। चैतन्य शर्मा का आगमन राकेश कालिया का भाजपा से प्रस्थान करवा रहा है तो इस आंच को समझना इतना भी आसान नहीं। होशियार सिंह ने पांव जबसे भाजपा की धरती पर रखा है, रमेश धवाला की चाल बदल गई है। कुटलैहड़ में देवेंद्र भुट्टो को पार्टी में देखते ही पूर्व मंत्री वीरेंद्र कंवर का कारवां असहज, तो बड़सर से इंद्रदत्त लखनपाल का पाला बदलते ही भाजपा के कंकाल भी कदमताल कर रहे हैं।

बेचैनियों के समुद्र में, लोकसभा चुनाव की गोताखोरी अगर कल कहीं कांगड़ा का टिकट सुधीर शर्मा को सौंप देती है, तो भाजपा की जेब भरेगी या पार्टी के नेताओं की खाली हो जाएगी। जाहिर तौर पर इन नौ पूर्व विधायकों का भाजपा में आगमन इतना भी सरल व तरल नहीं कि एकदम पार्टी के अनुशासन में समा जाएगा। दूसरी ओर प्रत्यक्ष रूप में कांग्रेस की जेब खाली हुई है, तो इस चोरी की वजह पार्टी की सीनाजोरी भी है। कांग्रेस ने एक बार फिर साबित किया कि यह पार्टी अपने पांव कुल्हाड़ी मारने की अभ्यस्त हो चुकी है। सारे घटनाक्रम की जड़ में भाजपा की खाद लगी, तो इसके कारण कांग्रेस में ही मौजूद रहे। अफसोस मनाने के लिए अब जनता को एकमात्र सहारा उपचुनाव है। आश्चर्य यह कि यह सब कुछ सरकार के पहरावे और राज्य के खर्च से हो रहा है। अभी यह समझा नहीं जा रहा कि कांग्रेस के घर में आग लगी कैसे। कम से कम जिस वजूद को सौंपकर हिमाचल की जनता को अगले पांच साल की आशाएं थीं, वे कहीं अपने ही घाव को सहलाती व कराहती हुई प्रतीत हो रही हैं। सरकार की सारी मेहनत अब राज्य के बजाय खुद की सुरक्षा में लगेगी। मंत्रिमंडल की उप समिति को अब अपने राजनीतिक समीकरण बचाने और बनाने हैं। उपमुख्यमंत्री मुकेश अग्निहोत्री की अध्यक्षता में अब सरकार और सत्ता की चारदीवारी की जिम्मेदारी सिद्ध करती है कि आइंदा एकछत्र साम्राज्य नहीं चलेगा और न ही ऐसी परिस्थिति से निपटने के लिए कोई और हस्ती परवान चढ़ सकती थी। जाहिर तौर पर सत्ता के समीकरण बदल चुके और इम्तिहान के प्रश्न पत्र भी। पिछले चुनाव का एक अलग हिसाब था, अब चुनाव के अर्थ, रहस्य और गणित बदल चुके हैं। कांग्रेस जाहिर तौर पर मुकेश जैसे अनुभवी, संतुलित व स्वीकार्य व्यक्ति की देखरेख में बहुत कुछ बचा सकती है। देखना यह होगा कि कैबिनेट की उप कमेटी स्पष्टता से कितना कह पाती है और इसके निष्कर्षों व निर्देशों की पालना में पार्टी व सरकार किस प्रकार समन्वित रूप से चल पाती है।

## शव संवाद-36

सत्ता के गलियारों में घूमते हुए बुद्धिजीवी ने इनसान को बुत और बुत को इनसान बनते देखा है। यह सत्ता को भी मालूम नहीं कि उसके भीतर कितनी प्रतिमा और कितनी प्रतिभा है, लेकिन जब गलियारे ही आमादा हो जाएं बताने और दिखाने के लिए, तो क्षमता बढ़ जाती है। हर सत्ता का कोई ने कोई गलियारा ऐसा भी होता है, जो हमेशा बतियाता है, वरना अब सरकारें खुद को प्रतिमा बनाने में शरीक हैं, इसलिए कार्यों की मौन प्रगति बेचैन है। यहीं बेचैनी नेताओं को प्रगतिशील बता रही है या बेचैन नेता ही प्रगति के असली पात्र हैं। पात्रता पहले लिखी होती थी, इसलिए प्रगतिशील लोग वास्तव में प्रगतिशील होते थे। अब नेताओं में पात्रता के द्वंद्व हैं ताकि मरने के बाद उनकी प्रतिमा पहरा देती रहे। दरअसल देश जब से नेताओं की पहरेदारी में खुद को निहार रहा है, इसकी अपनी पात्रता कभी संसद – कभी अनशन, कभी राशन – कभी भाषण, कभी मंच पर तो कभी लंच पर बेचैन है। बुद्धिजीवी एक रात वाकई सोकर उठा, तो वह अपने सपने के आधार पर देश के हालात पर प्रसन्न था। वह खुश था कि रात भर देश ने उसे खामोशी के साथ सोने दिया, लेकिन अगले ही पल दिन में तारे नजर आ गए। उसी की गली में आए पार्षद से लोग यह मांग कर रहे थे कि उनके लोगों के भी बुत लगाए जाएं। बुद्धिजीवी जनता में आए इस भटकाव को रोकने के लिए वहां भागा और उन्हें समझाने लगा कि इस तरह की मांग न करें। 'यह लोकतंत्र है, यहां मांग करने का अधिकार है, तो समानता का अधिकार भी है। जो नेता हमारे बनाए हैं, वे अगर प्रतिमा बनने के योग्य हो गए, तो हम क्यों नहीं', पहली बार जनता अपने अस्तित्व के लिए प्रतिमा बन जाना चाहती थी। बुद्धिजीवी ने उन्हें समझाया, 'प्रतिमा के रूप में अगर इनसान की बेकद्री हो गई, तो पत्थर भी रोएंगे और जमीन भी इनके बोझ से थक जाएगी।' जनता पहली बार नेताओं की तरह सोच रही थी, यह जानकर बुद्धिजीवी के तर्क और ज्ञान शक्ति जवाब दे गई। इसी बीच पार्षद ने कहा कि नगर निगम हर वार्ड से केवल एक-एक मूर्ति ही स्थापित कर पाएगा और यह पांच साल में केवल एक बार ही लगेगी। अब जनता यह नहीं सोच पा रही थी कि अपने-अपने वार्ड से किसकी प्रतिमा लगाई जाए। तभी एक बुजुर्ग ने कहा, 'हम इनसानों को मूर्ति नहीं बना सकते, लिहाजा बिजूका बनाएंगे।' सब ने बुद्धिजीवी में बिजूका के गुण देखकर उसे नेताओं की प्रतिमाओं के बीच खड़ा करने की ठान ली। वैसे भी बुद्धिजीवी व बिजूका में कोई अंतर नहीं है। वह वर्षों से राजनीतिक सत्ता के पक्षियों से देश की मूर्ति को बचा रहा है। वह मूर्ति में गांधी और मूर्ति में नेहरू देख-देख कर पक गया है, नए आदर्शों की मूर्तियां खोजते खोजते मूर्तिकारों पर शक करने लगा है। अंततः उसने एक ऐसे मूर्तिकार को खोज लिया जो तरह तरह के नेताओं की प्रतिमाओं में देश का अधिमान बढ़ा रहा था। मूर्तियों के अनेक ढांचे पहले से बने थे। पूछने पर मूर्तिकार बोला, 'सदियों से प्रतिमाएं बिना गर्दन के बन रही हैं, जिसने अपनी गर्दन उठा ली मूर्ति उसी की हो गई।' तभी सत्ता और सियासत के प्रभावशाली लोग वहां कई गर्दनें एक साथ लेकर पहुंचे। मूर्तिकार देश की तरक्की देखकर और बुद्धिजीवी अपनी बिजूका पोशाक में प्रसन्न था। एक-एक करके गर्दनें मूर्तियों पर लगा दी गईं और देश को पता चल गया कि अबकि बार किसकी सरकार। कल तक जहां बुद्धिजीवी को देश से शिकायत थी, आज जनता ने ही उसे वहीं प्रतिमाओं की रक्षा के लिए बिजूका बनाकर खड़ा कर दिया है। मूर्तियां बढ़ रही हैं, लेकिन बुद्धिजीवी बिजूका बनकर इनकी रक्षा कर रहा है। अब तो जिन जिंदा नेताओं की भी मूर्तियां लग रही हैं, वही वहां आकर बुद्धिजीवी बिजूका को उसका फर्ज याद दिलाते हैं। अब तक बुद्धिजीवी बिजूका को पता चल चुका है कि वह केवल बुतों के बीच अपनी भूमिका निभा सकता है।

## विचार

# देश के लिए हंसते-हंसते चूम लिया फांसी को

**इस क्रांतिकारी दल का एक ही उद्देश्य था, सेवा और त्याग की भावना मन में लिए देश पर प्राण न्योछावर कर सकने वाले नौजवानों को तैयार करना। लाला लाजपत राय जी की मौत का बदला लेने के लिए 17 दिसंबर, 1928 को भगत सिंह और राजगुरु ने अंग्रेज अफसर सांडर्स पर गोलियां चलाईं'**

भारत को स्वतंत्रता दिलाने में अनेक क्रांतिकारी सेनानियों व युवाओं का योगदान रहा है। युवा ऐसे मानो आजादी के सिवाए उन्हें कुछ भी मंजूर न हो। देश को वर्तमान परिदृश्य तक लाने के सफर में न जाने कितने युवा क्रांतिकारी व सेनानियों ने अपने प्राण न्योछावर किए हैं, जिनके प्राणों की आहुति से आज हम खुली हवा में सांस ले पाते हैं। ऐसे ही बलिदानियों में शुमार हैं भगत सिंह, राजगुरु व सुखदेव, जो ऐसी उम्र में फांसी पर चढ़े, जिस उम्र में आजकल युवाओं को अपने अच्छे या बुरे का बोध तक नहीं होता। उस उम्र में इन महान आत्माओं ने अपना जीवन देश की आजादी के प्रति न्योछावर कर दिया था। युवा पीढ़ी भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव के इतिहास को कभी न भूले, यह क्रांतिकारी नेता भारतीय समाज के लिए वह आदर्श हैं जिन्होंने अपनी अल्पायु में भारत को आजाद करवाने के लिए खुशी-खुशी फांसी का चूम लिया। हमें ऐसे क्रांतिकारी नेताओं के इतिहास को पढना चाहिए और ऐसे वीरों को याद रखना चाहिए। भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान क्रांतिकारी भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव को फांसी दी गई। इतिहास में 23 मार्च के दिन देश और दुनिया की कई महत्वपूर्ण घटनाएं दर्ज हुई हैं, लेकिन भगत सिंह व उनके साथी राजगुरु और सुखदेव को फांसी दिया जाना भारत के इतिहास में दर्ज सबसे बड़ी महत्वपूर्ण घटनाओं में से एक है।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम आंदोलन के इतिहास में इस तिथि को कभी भी नहीं भुलाया जा सकता। अगर आज हम नौजवान युवा पीढ़ी को देखें तो वे ऐसे वीर युवाओं के इतिहास से अनभिज्ञ हैं। हमारी सरकारें भी उसी घिसे पिटे इतिहास को रटाती हैं, बाबर, औरंगजेब, हुमायूं और गजनवी जैसे आक्रांताओं के इतिहास पढ़ाए जाते हैं। भले ही आजकल इस दिशा में सकारात्मक परिवर्तन स्वागत योग्य है, लेकिन जिन्होंने भारत को कोई दिशा नहीं दी, बल्कि भारत को लूटा व सोने की चिडिया कहे जाने वाले देश को गुलाम बना दिया, ऐसे शासकों के बारे में क्यों पढ़ाया जा रहा है, यह समझ से परे है। जरूरत है उस इतिहास को जानने की जिसमें युवाओं ने अपना बलिदान दिया है, अपने बलिदान से भारत की धरती को सींचा है। ऐसे नौजवानों के बलिदान को वर्तमान पीढ़ी कभी भी नहीं भुला सकती। भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव भारत के वे सच्चे सपूत थे जिन्होंने अपनी देशभक्ति और देशप्रेम को अपने प्राणों से भी अधिक महत्व दिया और मातृभूमि के लिए प्राण न्योछावर कर गए। 23 मार्च, यानी देश के लिए लड़ते हुए अपने प्राणों को न्योछावर करने वाले तीन वीर सपूतों का बलिदान दिवस। यह दिवस न केवल देश के प्रति सम्मान और हिंदुस्तानी होने पर गौरव का अनुभव कराता है, बल्कि वीर सपूतों के बलिदान को भीगे मन से श्रद्धांजलि देता है। उन अमर क्रांतिकारियों के बारे में आमजन की वैचारिक टिप्पणी का कोई अर्थ नहीं है। उनके उज्ज्वल चरित्रों को बस याद किया जा सकता है कि ऐसे मानव भी इस दुनिया में हुए हैं, जिनके आचरण किंवदंति हैं। भगत सिंह ने अपने अति संक्षिप्त जीवन में वैचारिक क्रांति की जो मशाल जलाई, उनके बाद अब किसी के लिए संभव न होगी। 'आदमी को मारा जा सकता है, उसके विचार को नहीं। बड़े साम्राज्यों का पतन हो जाता है, लेकिन विचार हमेशा जीवित रहते हैं और बहरे हो चुके लोगों को सुनाने के लिए ऊंची आवाज जरूरी है।' बम फेंकने के बाद भगत सिंह द्वारा फेंके गए पर्चों में यह लिखा था।

भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव ने नौजवानों में पैदा कर दी थी स्वतंत्रता के प्रति दीवानगी। जब अंग्रेजों के अत्याचारों से त्रस्त हमारे देश में चारों ओर हाहाकार मची हुई थी, तो ऐसे में इस वीर भूमि ने अनेक वीर सपूत पैदा किए, जिन्होंने अंग्रेजों की दासता से मुक्ति दिलाने की खातिर हंसते-हंसते देश की खातिर प्राण न्योछावर कर दिए। इन्हीं में तीन पक्के क्रांतिकारी दोस्त थे शहीद-ए-आजम भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव। इन तीनों ने अपने प्रगतिशील और क्रांतिकारी विचारों से भारत के नौजवानों में स्वतंत्रता के प्रति ऐसी दीवानगी पैदा कर दी कि अंग्रेज सरकार को डर लगने लगा था कि कहीं उन्हें यह देश छोड़ कर भागना न पड़ जाए। तीनों ने ब्रिटिश सरकार की नाक में इतना दम कर दिया था जिसके परिणामस्वरूप उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया और 24 मार्च 1931 को तीनों को एक साथ फांसी देने की सजा सुना दी गई। इनकी फांसी की बात सुनकर लोग इतने भडक़ चुके थे कि उन्होंने भारी भीड़ के रूप में जेल को घेर लिया था। अंग्रेज इतने भयभीत थे कि कहीं विद्रोह न हो जाए। इसी बात को मद्देनजर रखते हुए उन्होंने एक दिन पहले, यानी 23 मार्च 1931 की रात को ही भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरु को फांसी दे दी और चोरी छिपे उनके शवों को जंगल में ले जाकर जला दिया। जब लोगों को इस बात का पता लगा तो वे गुस्से में उधर भागे आए। अपनी जान बचाने और सबूत मिटाने के लिए अंग्रेजों ने उन वीरों की अधजली लाशों को बड़ी बेरहमी से नदी में फिंकवा दिया। छोटी उम्र में आजादी के दीवाने तीनों युवा अपने देश पर कुर्बान हो गए।

आज भी ये तीनों युवा नई पीढ़ी के आदर्श हैं। शहीद-ए-आजम भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरु, इन तीनों की शहादत को पूरा संसार सम्मान की नजर से देखता है और भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में यह एक महत्वपूर्ण घटना मानी जाती है। जहां एक ओर भगत सिंह और सुखदेव कालेज के युवा स्टुडैंट्स के रूप में भारत को आजाद कराने का सपना पाले थे, वहीं दूसरी ओर राजगुरु विद्याध्ययन के साथ कसरत के काफी शौकीन थे और उनका निशाना भी काफी तेज था। वे सब चंद्रशेखर आजाद के विचारों से इतने प्रभावित थे कि उन्होंने क्रांतिकारी दल में शामिल होकर अपना विशेष स्थान बना लिया था। इस क्रांतिकारी दल का एक ही उद्देश्य था, सेवा और त्याग की भावना मन में लिए देश पर प्राण न्योछावर कर सकने वाले नौजवानों को तैयार करना। लाला लाजपत राय जी की मौत का बदला लेने के लिए 17 दिसम्बर, 1928 को भगत सिंह और राजगुरु ने अंग्रेज अफसर सांडर्स पर गोलियां चलाईं और वहां से भाग निकले। बहरहाल, इन तीनों शहीदों को देश नमन करता है।

# पीएम किसान योजना की 17वीं किस्त को लेकर आया अपडेट, इन किसानों को नहीं मिलेगा योजना का लाभ

PM Kisan Yojana देश के करोड़ों किसानों के अकाउंट में 16 वीं किस्त की राशि आ गई है। वहीं कुछ किसान अभी भी योजना के लाभ से वंचित है। पीएम किसान योजना की 17वीं किस्त को लेकर अपडेट आया है। 17वीं किस्त के लिए रजिस्ट्रेशन का प्रोसेस शुरू हो गया है। आज हम आपको बताएंगे कि किन किसानों को 17वीं किस्त का लाभ नहीं मिलेगा और क्यों?

परिवहन विशेष न्यूज

PM Kisan Yojana की 17वीं किस्त को लेकर आया अपडेट, इन किसानों को नहीं मिलेगा योजना का लाभ

PM Kisan Yojana देश के करोड़ों किसानों के अकाउंट में 16 वीं किस्त की राशि आ गई है। वहीं कुछ किसान अभी भी योजना के लाभ से वंचित है। पीएम किसान योजना की 17वीं किस्त को लेकर अपडेट आया है। 17वीं किस्त के लिए रजिस्ट्रेशन का प्रोसेस शुरू हो गया है। आज हम आपको बताएंगे कि किन किसानों को 17वीं किस्त का लाभ नहीं मिलेगा और क्यों?

**PM Kisan Yojana की 17वीं किस्त को लेकर आया अपडेट**

बिजनेस डेस्क, नई दिल्ली। भारत सरकार द्वारा किसानों के लाभ के लिए कई स्कीम चला रही है। इन स्कीम में से एक पीएम किसान सम्मान निधि योजना (PM Kisan Samman Nidhi Yojana) भी है। सरकार इस योजना में शामिल लाभार्थी को आर्थिक सहायता देते हैं।

वर्तमान में पीएम किसान योजना का लाभ देश के करोड़ों किसानों को मिल रहा है। इस योजना में सरकार द्वारा सालाना 6,000 रुपये की राशि दी जाती है। यह राशि साल में किस्तों में दी जाती है। इसका मतलब है कि हर किस्त में किसानों के अकाउंट में 2,000 रुपये आते हैं।

28 फरवरी 2024 को सरकार ने योजना की 16वीं किस्त जारी की थी। देश के करोड़ों किसानों को योजना का लाभ मिला पर वहीं कुछ किसानों को वंचित भी रहना पड़ा। अब किसानों को योजना की 17वीं किस्त का इंतजार है।

अगर आप भी 17वीं किस्त का लाभ उठाना चाहते हैं तो आज हम आपको बताएंगे कि पीएम किसान का रजिस्ट्रेशन प्रोसेस क्या है।

**कैसे करें रजिस्ट्रेशन**

पीएम किसान योजना का लाभ पाने के लिए आवेदक को सबसे पहले पीएम किसान योजना की ऑफिशियल वेबसाइट (pmkisan.gov.in.) पर जाना होगा।

यहां राइट साइड में Farmers Corner पर क्लिक करने के बाद आपको रजिस्ट्रेशन करना होगा।

बता दें कि रजिस्ट्रेशन के लिए आपको आधार कार्ड (Aadhaar Card), बैंक पासबुक (Bank Passbook), जमीन के डॉक्यूमेंट, एड्रेस प्रूफ देना होगा।

**इन किसानों को नहीं मिलेगा लाभ**

योजना का लाभ उन किसानों को नहीं मिलेगा जिन्होंने ई-केवाईसी (Ekyc) और जमीन का सत्यापन नहीं करवाया होगा।

घर में केवल एक मेंबर को ही योजना का लाभ मिलेगा। इसका मतलब है कि पिता-बेटे में से कोई एक ही स्कीम का लाभ उठा सकता है।

अगर परिवार में किसी मेंबर की सरकारी नौकरी है तो उन्हें योजना का लाभ नहीं मिलेगा।

कोई परिवार का सदस्य किसी प्रोफेशन (जैसे-वकील, डॉक्टर, प्रोफेसर आदि) में कार्यरत है तो वह भी योजना के लिए पात्र नहीं है।

जो किसान किसी दूसरे व्यक्ति के जमीन पर खेती करते हैं, वह भी इस योजना का लाभ नहीं उठा सकते हैं। इसका मतलब है कि जिन किसानों के पास खुद की जमीन है उन्हें ही योजना का लाभ मिलेगा।

# होली के दिन इन शहरों में सस्ता हुआ पेट्रोल-डीजल, चेक करें क्या है फ्यूल की कीमत

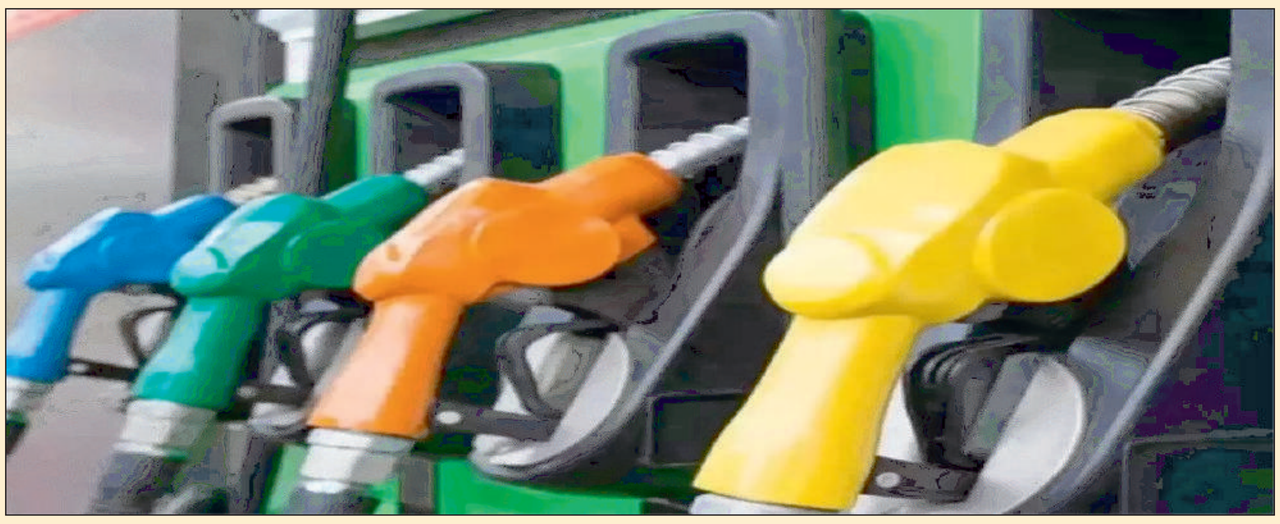

Petrol Diesel Price Today आज देशभर में रंगो का त्योहार यानी होली (Holi 2024) मनाया जा रहा है। आज तेल कंपनियों ने देश के मेट्रोसिटी के साथ बाकी सभी शहरों के भी पेट्रोल-डीजल की कीमतों को अपडेट किया है। अगर आप भी दोस्तों के साथ होली मनाने के लिए बाहर जाने वाले हैं तो एक बार अपने शहर के फ्यूल के रेट को जरूर चेक करें।

**नई दिल्ली।** आज देशभर में होली (Holi 2024) का त्योहार मनाया जा रहा है। होली के इस शुभ अवसर पर तेल कंपनियों ने फ्यूल की कीमतों को अपडेट कर दिया है।

इस महीने तेल कंपनियों ने गाड़ी चालकों को होली का गिफ्ट दिया है। दरअसल, कुछ दिन पहले ऑयल मार्केटिंग कंपनियों ने पेट्रोल-डीजल की कीमतों में 2 रुपये की कटौती की है।

अगर आप भी आज अपने दोस्तों के साथ होली खेलने के लिए बाहर जाने वाले हैं तो एक बार चेक कर लें कि आपके शहर में पेट्रोल-डीजल कितने रुपये लीटर मिल रहा है।

**मेट्रोसिटी में पेट्रोल-डीजल की ताजा कीमत**

HPCL की वेबसाइट के अनुसार देश के महानगरों में ये है फ्यूल की कीमतः

राजधानी दिल्ली में एक लीटर पेट्रोल की कीमत 94.76 रुपये और डीजल की कीमत 87.66 रुपये प्रति लीटर बनी हुई है।

मुंबई में पेट्रोल की कीमत 104.19 रुपये प्रति लीटर और डीजल की कीमत 92.13 रुपये प्रति लीटर बनी हुई है।

कोलकाता में पेट्रोल की कीमत 103.93 रुपये प्रति लीटर और डीजल 90.74 रुपये प्रति लीटर बनी हुई है।

चेन्नई में पेट्रोल की कीमत 100.73 रुपये प्रति लीटर और डीजल की कीमत 92.32 रुपये प्रति लीटर बनी हुई है।

**पटना समेत अन्य शहरों में पेट्रोल- डीजल की ताजा कीमत**

नोएडाःपेट्रोल 94.81 रुपये प्रति लीटर और डीजल 87.94 रुपये प्रति लीटर

गुरुग्रामःपेट्रोल 95.18 रुपये प्रति लीटर और डीजल 88.03 रुपये प्रति लीटर

बेंगलुरुःपेट्रोल 99.82 रुपये प्रति लीटर और डीजल 85.92 रुपये प्रति लीटर

चंडीगढ़ःपेट्रोल 94.22 रुपये प्रति लीटर और डीजल 82.38 रुपये प्रति लीटर

हैदराबादःपेट्रोल 107.39 रुपये प्रति लीटर और डीजल 95.63 रुपये प्रति लीटर

जयपुरः पेट्रोल 104.86 रुपये प्रति लीटर और डीजल 90.34 रुपये प्रति लीटर

पटनाः पेट्रोल 105.16 रुपये प्रति लीटर और डीजल 92.03 रुपये प्रति लीटर

लखनऊः पेट्रोल 94.63 रुपये प्रति लीटर और डीजल 87.74 रुपये प्रति लीटर

# वोटर आईडी कार्ड में घर का पता बदलना है आसान, जानें ऑफलाइन और ऑनलाइन एड्रेस अपडेट करने का स्टेप बाय स्टेप प्रोसेस

Voter ID Card Correction चुनाव का बिगुल बज चुका है। अगले महीने से देश के सभी राज्यों में चुनाव शुरू हो जाएंगे। वोट डालने के लिए वोटर आईडी कार्ड काफी जरूरी होता है। अगर आप भी इस लोकसभा चुनाव में वोट डालने की तैयारी कर रहे हैं तो ये खबर आपके लिए बेहद जरूरी है। आज हम आपको बताएंगे कि ऑफलाइन और ऑनलाइन कैसे घर का पता अपडेट करें।

परिवहन विशेष न्यूज

चुनाव का बिगुल बज चुका है। अगले महीने से देश के सभी राज्यों में चुनाव शुरू हो जाएंगे। वोट डालने के लिए वोटर आईडी कार्ड काफी जरूरी होता है। अगर आप भी इस लोकसभा चुनाव में वोट डालने की तैयारी कर रहे हैं तो ये खबर आपके लिए बेहद जरूरी है। आज हम आपको बताएंगे कि ऑफलाइन और ऑनलाइन कैसे घर का पता अपडेट करें।

**नई दिल्ली।** देश में अगले महीने से लोकसभा के चुनाव (Lok Sabha Elections 2024) होने वाले हैं। भारत में मतदान करने की उम्र 18 वर्ष से ज्यादा है। वोट देने के लिए वोटर आईडी कार्ड (Voter ID Card) एक जरूरी डॉक्यूमेंट है।

भारत का निर्वाचन आयोग द्वारा वोटर आईडी कार्ड जारी किया जाता है। इसका इस्तेमाल नगरपालिका, राज्य और राष्ट्रीय चुनाव में वोट डालने किया जाता है। इसके अलावा सिम कार्ड खरीदने या फिर कहीं पर भी आईडी प्रूफ देने के लिए भी इसका उपयोग किया जाता है।

ऐसे में अगर आपके वोटर आईडी कार्ड पर पुराना एड्रेस है तो आज हम आपको बताएंगे कि आप ऑफलाइन और ऑनलाइन कैसे वोटर आईडी कार्ड में अपना नया एड्रेस अपडेट (Voter ID Card Address Change Process) कर सकते हैं।

ऑफलाइन कैसे बदलें घर का पता ( Change Address on Voter ID Offline)

स्टेप 1: आपको अपने घर के नजदीक वाले निर्वाचन ऑफिस में जाना होगा।

स्टेप 2: यहां आपको फॉर्म-8 भरना होगा।

स्टेप 3: इसके बाद आपको अपना एड्रेस अपडेट करने के लिए एड्रेस प्रूफ करने वाले डॉक्यूमेंट को अटैच करना होगा।

स्टेप 4: अब फॉर्म और डॉक्यूमेंट को सबमिट करना होगा।

स्टेप 5: इसके बाद अधिकारी द्वारा आपके एड्रेस को अपडेट कर दिया जाएगा।

**ये डॉक्यूमेंट है जरूरी**

बिजली, पानी या गैस का बिल

आधार कार्ड (Aadhaar Card)

बैंक या पोस्ट ऑफिस का पासबुक

इंडियन पासपोर्ट

ऑनलाइन ऐसे बदलें पता (change address on voter ID card online)

स्टेप 1: इलेक्शन कमिशन ऑफ इंडिया की अधिकारिक वेबसाइट (https://eci.gov.in) पर जाएं

स्टेप 2: वेबसाइट पर Electors पर क्लिक करने के बाद update your details in electoral role को सेलेक्ट करें।

स्टेप 3: यहां आपको स्क्रीन पर फॉर्म-8 शो होगा उसे सेलेक्ट करें।

स्टेप 4: इसके बाद Shifting of residence/correction of entries in existing electoral roll/replacement of 5.EPIC/marking of PwD के ऑप्शन को सेलेक्ट करना है।

स्टेप 5: अब अपना State, District and Assembly/Parliamentary Constituency को सेलेक्ट करें और Next पर जाएं।

स्टेप 6: इसके बाद आधार नंबर, ईमेल आईडी और मोबाइल नंबर दर्ज करें।

स्टेप 7: अब अपना नया एड्रेस भरें और उससे संबंधित डॉक्यूमेंट को अपलोड करें।

# कौन-सा है बेस्ट ऑप्शन, क्या है इन दोनों में अंतर; जानें सबकुछ

बैंक में अकाउंट ओपन करते समय हमें अक्सर सेविंग अकाउंट और करंट अकाउंट में से कोई एक ऑप्शन को सेलेक्ट करना होता है। कई लोगो सेविंग अकाउंट के ऑप्शन को सेलेक्ट करते हैं तो कई करंट अकाउंट को चुनते हैं। आज हम आपको इस आर्टिकल में बताएंगे कि इन दोनों में क्या अंतर है।

**नई दिल्ली।** वर्तमान में यूपीआई ट्रांजैक्शन हो या फिर किसी दूसरे व्यक्ति को ऑनलाइन पेमेंट करनी की बात हो तो हमें बैंक अकाउंट की आवश्यकता होती है।

जब भी बैंक अकाउंट ओपन करते हैं तो बैंक हम से सेविंग अकाउंट (Saving Account) और करंट अकाउंट (Current Account) में से कोई एक ऑप्शन को सेलेक्ट करने के लिए कहते हैं।

कई लोग सेविंग अकाउंट ओपन करते हैं तो कई करंट अकाउंट। आज हम आपको बताएंगे कि सेविंग अकाउंट और करंट अकाउंट (Saving Account Vs Current Account) में क्या अंतर है और इनमें से कौन-सा ऑप्शन बेस्ट है।

वैसे तो इन दोनों अकाउंट का इस्तेमाल ट्रांजेक्शन करने और पैसे डिपॉजिट करने के लिए किया जाता है। लेकिन इन दोनों अकाउंट के फीचर इसे एक दूसरे से काफी अलग करते हैं।

**सेविंग अकाउंट के फीचर**

सेविंग अकाउंट उन लोगों के लिए होता है जो सेविंग के लिए अकाउंट का इस्तेमाल करते हैं। इसलिए इसे बचत खाता भी कहते हैं।

सेविंग अकाउंट में मौजूद राशि के आधार पर बैंक द्वारा ब्याज दिया जाता है।

कई बैंक में ग्राहक जीरो बैलेंस (Zero Balance) पर भी अकाउंट को ओपन कर सकते हैं। वहीं कुछ बैंक कस्टमर के लिए मिनिमम बैलेंस की लिमिट भी तय करते हैं।

सेविंग अकाउंट में मिनिमम बैलेंस के साथ मैक्सिमम बैलेंस की भी लिमिट होती है।

सेविंग अकाउंट होल्डर हर महीने एक लिमिट तक ही अकाउंट से ट्रांजेक्शन कर सकते हैं। अगर उन्हें लिमिट से ज्यादा ट्रांजेक्शन करना होता है तब उन्हें बैंक से परमिशन लेना होता है।

अगर सेविंग अकाउंट होल्डर को एक वित्त वर्ष के भीतर 10,000 रुपये से ज्यादा ब्याज आता है तो उन्हें इंटरेस्ट पर टैक्स (Tax) का भुगतान करना होता है। सीनियर सिटीजन के लिए यह लिमिट 50,000 रुपये होती है।

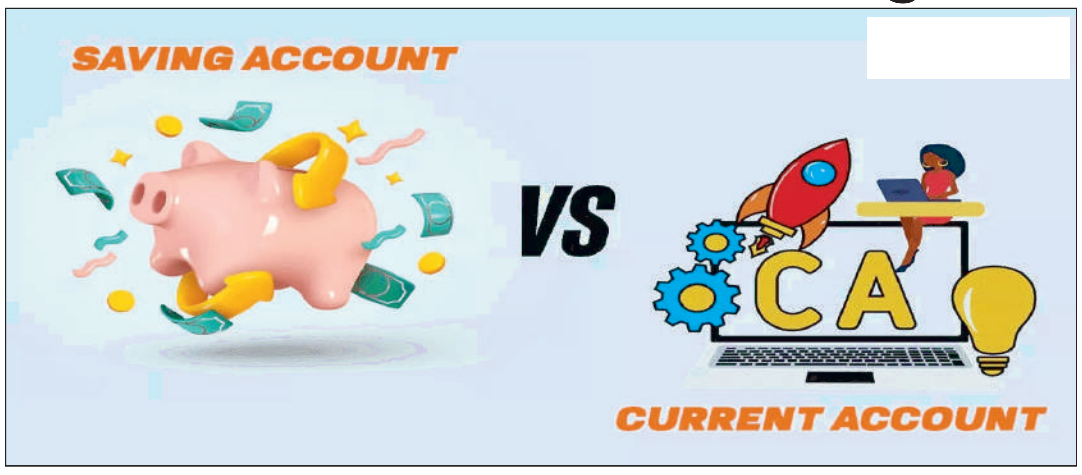


सेविंग अकाउंट होल्डर को बैंक लॉकर पर 15 से 30 फीसदी तक की छूट मिलती है।

सेविंग अकाउंट के जरिये कस्टमर आसानी से क्रेडिट कार्ड या फिर इंश्योरेंस के प्रीमियम का भुगतान कर सकते हैं।

**करंट अकाउंट के फीचर**

बिजनेस ट्रांजैक्शन के पर्पस से करंट अकाउंट ओपन किया जाता है। इसलिए इसे चालू खाता भी कहते हैं।

इस अकाउंट में बैंक द्वारा कोई ब्याज नहीं दिया जाता है।

अकाउंट पर किसी भी प्रकार का कोई इंटरेस्ट नहीं लगता है इस वजह से अकाउंट होल्डर को करंट अकाउंट पर कोई टैक्स का भुगतान नहीं करना होता है।

करंट अकाउंट होल्डर को अकाउंट में मिनिमम बैलेंस को मेंटेन करना होता है। हालांकि, इसमें मैक्सिमम बैलेंस की कोई लिमिट नहीं होती है।

यह अकाउंट बिजनेस ट्रांजैक्शन के लिए ओपन किया जाता है। इस वजह से इस अकाउंट के जरिये एक महीने में कितना भी ट्रांजेक्शन कर सकते हैं।

करंट अकाउंट होल्डर देश के किसी भी बैंक में जाकर कैश विड्रॉ कर सकते हैं।

करंट अकाउंट होल्डर को आसानी से लोन (Loan) भी मिल जाता है। कई बैंक करंट खाता धारक को डोर स्टेप लोन की भी सुविधा देता है।

करंट खाताधारक ड्राफ्ट (Draft) के जरिये भी आसानी से ट्रांजेक्शन कर सकते हैं।

# कैसे होता है ग्रेच्युटी का कैलकुलेशन, इसके लिए कितने साल नौकरी करना है जरूरी?

परिवहन विशेष न्यूज

ग्रेच्युटी कर्मचारियों के सैलरी स्ट्रक्चर का एक अहम हिस्सा होती है। इसमें कर्मचारी और कंपनी दोनों योगदान करते हैं। हालांकि कंपनी की हिस्सेदारी कर्मचारी के मुकाबले अधिक होती है। ग्रेच्युटी पाने के लिए आपको कुछ शर्तों का पालन करना पड़ता है। आइए जानते हैं कि ग्रेच्युटी मिलने का क्या नियम है और यह कैलकुलेट कैसे की जाती है।

**नई दिल्ली।** सरकार ने कर्मचारियों के रिटायरमेंट को बेहतर करने के लिए कई प्रावधान कर रखे हैं। इन्हीं में से एक है, ग्रेच्युटी (Gratuity)। एंप्लॉयी प्रोविडेंट फंड (EPF) की तरह ग्रेच्युटी में भी कर्मचारी और कंपनी का योगदान होता है। लेकिन, EPF के उलट यहां कर्मचारी के वेतन से मामूली हिस्सा कटता है और कंपनी इसका बड़ा बोझ उठाती है।

आइए जानते हैं कि ग्रेच्युटी क्या होती है, यह कब मिलती है और इसका कैलकुलेशन कैसे होता है।

**ग्रेच्युटी (Gratuity) क्या होती है?**

ग्रेच्युटी एक तरह से कंपनी से वफादारी का इनाम होता है। अगर आप एक ही कंपनी में 5 या इससे अधिक साल तक लगातार काम करते हैं, तो आप ग्रेच्युटी के हकदार हो जाते हैं। हालांकि, 5 साल की सेवा अवधि को कम करके एक साल तक करने की बात कही जा रही है। केंद्र के न्यू वेज कोड में इस पर चर्चा हुई है और इसके लागू होने पर करोड़ों कर्मचारियों को फायदा होगा।

**ग्रेच्युटी कब मिलती है?**

ग्रेच्युटी आमतौर पर रिटायरमेंट के मिलती है। लेकिन, अगर पांच साल बाद नौकरी छोड़ते या बदलते हैं, तो भी ग्रेच्युटी मिल जाएगी। अगर सर्विस के दौरान कर्मचारी की मृत्यु होती है या फिर वह दिव्यांग होता है, तो पांच साल कम सेवा पर भी ग्रेच्युटी मिल जाती है।

अगर आपने नौकरी के दौरान संस्थान की किसी प्रॉपर्टी का नुकसान किया है, तो उसकी भरपाई भी आपकी ग्रेच्युटी से की जा सकती है।

**ग्रेच्युटी कैसे कैलकुलेट होती है?**

ग्रेच्युटी कैलकुलेट करने का फॉर्मूला बड़ा आसान है,

कुल ग्रेच्युटी = (आखिरी बेसिक मंथली सैलरी) x (15/26) x (नौकरी के साल)।

मिसाल के लिए, आपने 2019 में नौकरी शुरू की और 2024 में रिजाइन कर दिया। रिजाइन के समय आपकी बेसिक मंथली सैलरी 50 हजार रुपये थी। तो आपकी ग्रेच्युटी की रकम ऐसे पता चलेगी।

50,000 x (15/26) x 5 = 1,44,230 रुपये

यहां गौर करने वाली बात यह है कि फरवरी को छोड़कर साल के बाकी सभी महीने 30 या 31 दिन के होते हैं। लेकिन, पेमेंट ऑफ ग्रेच्युटी एक्ट, 1972 के तहत चार साप्ताहिक छुट्टियों को वर्किंग डेज को 26 दिन तय किया गया है।

**अगर कंपनी ग्रेच्युटी ना दे तो...**

अगर आपने किसी संस्थान में लगातार पांच साल किया है और आप पर कोई गैरकानूनी काम करने का आरोप नहीं है, तो आपको ग्रेच्युटी की पूरी रकम मिलेगी। अगर कंपनी आपका पैसा रोकती है, तो आप जिला श्रम आयुक्त के पास जाकर शिकायत कर सकते हैं। फैसला आपके पक्ष में आने की सूरत में कंपनी को ग्रेच्युटी के साथ ही जुर्माना और ब्याज भी देना होगा।

# उज्जैन महाकाल के गर्भगृह में लगी आग

महाकाल मंदिर में प्रतिदिन की तरह सोमवार तड़के भी भस्म आरती हो रही थी. सुबह करीब 5.45 बजे आरती के अंतिम क्षणों में बाबा को गुलाल चढ़ाया जा रहा था. साथ में पुजारी भी एक दूसरे पर गुलाल डाल रहे थे. इसी दौरान आरती की थाल में जल रहे कपूर पर गुलाल गिरने से वह बिखर गया. इसके बाद महाकाल के ऊपर बांधे गए फ्लेक्स में आग पकड़ लग गई.

विश्व प्रसिद्ध महाकालेश्वर मंदिर में सोमवार तड़के एक बड़ा हादसा हो गया. यहां भस्म आरती के दौरान गर्भ गृह में आग लग गई. घटना में पुजारी सहित 14 लोग झुलस गए. बताया जाता है कि आग लगने की ये घटना आरती में जल रहे कपूर भभकने से हुई. मामले में कलेक्टर नीरज सिंह ने जांच के आदेश दिए हैं. आपको बता दें कि जिस वक्त ये हादसा हुआ, उस वक्त सीएम डॉ. मोहन यादव के पुत्र वैभव और बेटी डॉक्टर आकांक्षा नंदी हाल में बैठकर बाबा की आराधना कर रहे थे. गृभगृह में ऐसे फैली आग'

दरअसल, महाकाल मंदिर में प्रतिदिन की तरह सोमवार तड़के भी भस्म आरती हो रही थी. सुबह करीब 5.45 बजे आरती के अंतिम क्षणों में बाबा को गुलाल चढ़ाया जा रहा था. साथ में पुजारी भी एक दूसरे पर गुलाल डाल रहे थे. इसी दौरान आरती की थाल में जल रहे कपूर पर गुलाल गिरने से वह बिखर गया. इसके बाद महाकाल के ऊपर बांधे गए फ्लेक्स में आग पकड़ लग गई. इसके बाद अचानक आग फैल गई और पूजा कर रहे संजय गुरु, दिलीप गुरु, कमल जोशी, विकास और मनोज पुजारी, अंश पुरोहित, सेवक महेश शर्मा, चिंतामन गेहलोत सहित 14 लोग घायल हो गए. सभी घायलों को जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया है. जहां पर दो को मामूली चोट के कारण छुट्टी कर दी गई. वहीं, 6 की हालत गंभीर होने पर उन्हें इंदौर रेफर कर दिया गया है.

**रंग से बचाने के लिए लगाया गया था फ्लेक्स**

बता दें कि गर्भ की दीवार और छत पर चांदी की परत चढ़ी हुई है. होली पर बाबा महाकाल को गुलाल चढ़ाया जाता है. वहीं, पुजारी भी एक दूसरे पर रंग डालते हैं. इन रंगों से गर्भ की दीवार खराब न हो, इसलिए शिवलिंग के ऊपर इस वर्ष प्लास्टिक का फ्लेक्स लगाया गया था. बताया जाता है कि गर्भ गृह में एक दूसरे पर रंग डालने के दौरान गुलाल आरती की थाल में जल रहे कपूर पर गिर गया, जिससे कपूर भभका और फ्लैक्स ने आग पकड़ ली, जिसकी वजह से ये हादसा हुआ. हालांकि, आग पर कुछ ही देर में काबू पा लिया गया, लेकिन तब तक 14 लोग झुलस चुके थे.

## 'ये दुर्घटना अत्यंत पीड़ादायक', उज्जैन के महाकाल मंदिर में आग की घटना पर PM मोदी ने जताया दुख

उज्जैन के महाकाल मंदिर में भस्म आरती के दौरान आग की चपेट में आने से पांच पुजारी समेत 14 लोग झुलस गए। इस घटना पर अब प्रधानमंत्री मोदी ने दुख जताया है। पीएम मोदी ने घायलों के जल्द स्वस्थ होने की कामना की है। पीएम मोदी ने कहा कि होली समारोह के दौरान महाकाल मंदिर में आग लगने की खबर सुनकर मुझे दुख हुआ।

**नई दिल्ली।** उज्जैन के महाकाल मंदिर में भस्म आरती के दौरान आग की चपेट में आने से पांच पुजारी समेत 14 लोग झुलस गए। इस घटना पर अब प्रधानमंत्री मोदी ने दुख जताया है। पीएम मोदी ने घायलों के जल्द स्वस्थ होने की कामना की है।

**पीएम ने की घायलों के स्वस्थ होने की कामना**

प्रधानमंत्री कार्यालय ने एक्स पर एक पोस्ट किया। पीएम मोदी ने कहा कि उज्जैन के महाकाल मंदिर में हुई दुर्घटना को अत्यंत पीड़ादायक है। इस हादसे में घायल सभी श्रद्धालुओं के शीघ्र स्वस्थ होने की कामना करता हूं। राज्य सरकार की देखरेख में स्थानीय प्रशासन पीड़ितों की हरसंभव मदद में जुटा है।

पीएम मोदी ने कहा कि होली समारोह के दौरान महाकाल मंदिर में आग लगने की खबर सुनकर मुझे दुख हुआ। मैं आग में घायल हुए भक्तों और पुजारियों के शीघ्र स्वस्थ होने की प्रार्थना करता हूं।

**होली समारोह के दौरान लग गई थी आग**

बता दें कि सोमवार सुबह महाकाल मंदिर में उस समय अफरा-तफरी मच गई। जब होली समारोह के दौरान भस्म आरती के समय मंदिर के गर्भगृह में आग लग गई थी। इस हादसे में कई पुजारी समेत 14 लोग घायल हो गए थे।

**सीएम मोहन बोले- दोषियों के खिलाफ होगी कार्रवाई**

वहीं, इस घटना का मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री मोहन यादव ने संज्ञान लिया और उन्होंने मजिस्ट्रेट जांच का आदेश दिया। उन्होंने कहा कि दोषी पाए जाने वालों के खिलाफ कार्रवाई की जाएगी।

## राहुल गांधी को चुनौती देगा ये नेता, बीजेपी ने वायनाड सीट पर किया प्रत्याशी के नाम का एलान

Lok Sabha Election 2024 भाजपा पार्टी (Bharatiya Janata Party) ने केरल में अपने प्रदेश अध्यक्ष के. सुरेंद्रन को कांग्रेस नेता राहुल गांधी से मुकाबला करने के लिए वायनाड निर्वाचन क्षेत्र से मैदान में उतारा है। भाजपा द्वारा जारी उम्मीदवारों की सूची के मुताबिक सरकारी महाविद्यालय के पूर्व प्रधानाचार्य टी एन सरसु उत्तरी पलक्कड़ जिले के अलाथुर से अपनी किस्तम आजमाएंगे।

**तिरुवनंतपुरम।** केरल में शेष चार सीटों के लिए उम्मीदवारों की घोषणा करते हुए भाजपा ने अपने राज्य प्रमुख के सुरेंद्रन को हाई-प्रोफाइल वायनाड निर्वाचन क्षेत्र से कांग्रेस नेता राहुल गांधी के खिलाफ मैदान में उतारा है। वहीं, पार्टी ने शिक्षाविद और श्री शंकरा संस्कृत विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति के एस राधाकृष्णन, और अभिनेता से नेता बने जी कृष्णकुमार को क्रमशः एर्णाकुलम तथा कोल्लम सीट से अपना उम्मीदवार बनाया है।

इसके अलावा, सरकारी कॉलेज के पूर्व प्रिंसिपल टी एन सरासु उत्तरी पलक्कड़ जिले के अलाथुर से चुनावी किस्मत आजमाएंगे।

भाजपा केरल में कांग्रेस के नेतृत्व वाले यूडीएफ और सीपीआई (एम) के नेतृत्व वाले एलडीएफ के प्रभुत्व वाली दशकों पुरानी द्विध्रुवीय राजनीति को तोड़ने का प्रयास कर रही है। पार्टी ने पहले 12 सीटों पर उम्मीदवारों की घोषणा की थी। उसकी सहयोगी पार्टी बीडीजेएस राज्य में चार सीटों पर चुनाव लड़ेगी।

**भाजपा ने राहुल गांधी को दिया टफ कंपटीशन**

पार्टी ने आश्चर्यजनक फैसला करते हुए कांग्रेस के गढ़ माने जाने वाले वायनाड से सुरेंद्रन को उतारने का फैसला किया। भाजपा राहुल गांधी के खिलाफ एक मजबूत उम्मीदवार खड़ा करके अपने विरोधियों को करारा जवाब देने की कोशिश कर रही है। माकपा ने यहां से एनी राजा को मैदान में उतारा है।

**भाजपा ने 2020 में बनाया था केरल का प्रदेश अध्यक्ष**

सुरेंद्रन सबरीमाला मंदिर में अब तक चली आ रही परंपरा के विपरीत रजस्वला महिलाओं को प्रवेश देने के खिलाफ भाजपा के उग्र आंदोलन का चेहरा थे और उन्हें 2020 में पार्टी का केरल प्रदेश अध्यक्ष बनाया गया था।

कोझिकोड जिले के उलेयेरी निवासी सुरेंद्रन ने भारतीय जनता युवा मोर्चा के वायनाड जिला अध्यक्ष के रूप में अपने करियर की शुरुआत की थी। उन्होंने 2019 के लोकसभा चुनाव में पथानमथिट्टा से चुनाव लड़ा था लेकिन हार गए। आपको मालूम हो कि केरल की 20 लोकसभा सीटों पर 26 अप्रैल को मतदान होगा।

# 'कोई खेले रेल में, कोई खेले जेल में...,' अरविंद केजरीवाल की गिरफ्तारी पर मनोज तिवारी का तंज

परिवहन विशेष न्यूज

आज होली का त्योहार देशभर में मनाया जा रहा है। अभिनेता से लेकर नेता तक रंगों के इस त्योहार को उत्साह के साथ मना रहे हैं। इस बीच राष्ट्रीय राजधानी में अपने आवास पर भाजपा सांसद मनोज तिवारी ने होली समारोह का आयोजन किया। भाजपा सांसद ने गाना गाते हुए जेल में बंद दिल्ली के सीएम अरविंद केजरीवाल पर तंज कसते हुए दिखे।

**नई दिल्ली।** राष्ट्रीय राजधानी में अपने आवास पर भाजपा सांसद मनोज तिवारी ने होली समारोह का आयोजन किया। इस समारोह के दौरान मनोज तिवारी लोक गीत गाते हुए भी देखे गए। भाजपा सांसद ने शराब नीति मामले में प्रवर्तन निदेशालय द्वारा उनकी गिरफ्तारी पर दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल पर गाने के तौर पर कटाक्ष किया।

ईडी द्वारा केजरीवाल की गिरफ्तारी का जिक्र करते हुए बीजेपी सांसद ने गाना गाया, 'कोई खेले रेल में, कोई खेले जेल में।'

मनोज तिवारी ने अपने गानों के जरिए यह भरोसा भी जताया कि लोकसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी फिर से सरकार बनाएगी।

**होली के त्यौहार पर भी आप ने जारी रखा विरोध**

इस बीच, जहां पूरा देश होली के जश्न के रंगों में सराबोर था। वहीं आम आदमी पार्टी के नेताओं ने मनी लॉनड्रिंग मामले से जुड़े दिल्ली उत्पाद शुल्क नीति मामले में अरविंद केजरीवाल की गिरफ्तारी के खिलाफ अपना विरोध जारी रखा।

**आप नेता आतिशी ने की देशवासियों से यह अपील**

वहीं, दिल्ली की मंत्री और आप नेता आतिशी ने सोमवार को कहा कि उन्होंने इस साल रंगों से नहीं खेलने और होली नहीं मनाने का संकल्प लिया है और देशवासियों से क्रूरता और बुराई के खिलाफ लड़ाई में उनके साथ शामिल होने की अपील की है।

आम आप नेता ने एक्स पर पोस्ट किया, होली सिर्फ़ एक त्योहार नहीं, बल्कि बुराई के ऊपर अच्छाई की जीत का प्रतीक है, क्रूरता के ऊपर इंसाफ का प्रतीक है। आज, आम आदमी पार्टी का हर नेता दिन रात इसी बुराई, क्रूरता और नाइंसाफी से लड़ रहा है। इस साल आम आदमी पार्टी ने संकल्प किया है कि हम रंगों से नहीं खेलेंगे, होली नहीं मनाएंगे।

**बीते शुक्रवार को हुई थी दिल्ली के सीएम केजरीवाल को जेल**

आपको मालूम हो कि दिल्ली के सीएम अरविंद केजरीवाल को मनी लॉनड्रिंग मामले से जुड़े दिल्ली उत्पाद शुल्क नीति मामले में जांच एजेंसी द्वारा गिरफ्तार किए जाने के एक दिन बाद शुक्रवार को सात दिनों के लिए यानी 28 मार्च तक प्रवर्तन निदेशालय की हिरासत में भेज दिया गया था।

यह मामला दिल्ली उत्पाद शुल्क नीति 2021-22 को तैयार करने और लागू करने में कथित अनियमितताओं से संबंधित है, जिसे बाद में रद्द कर दिया गया था। इंडिया ब्लॉक के कई नेता अरविंद केजरीवाल के समर्थन में सामने आए हैं और उन्होंने भाजपा और केंद्र सरकार पर विपक्ष की बांह मरोड़ने का आरोप लगाया है। हालांकि, बीजेपी ने सभी आरोपों से इनकार किया है।

# जेएनयू में फिर लहराया लाल झंडा, वाम संगठनों का क्लीन स्वीप

परिवहन विशेष न्यूज

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय छात्र संघ चुनाव का परिणाम घोषित हो गया है। परिणाम में लेफ्ट ने क्लीन स्वीप कर लिया है। अध्यक्ष उपाध्यक्ष सचिव और संयुक्त सचिव पद पर जीत हासिल कर ली है। परिणाम घोषित होते ही जेएनयू में जश्न का माहौल हो रहा है। जवाहरलाल नेहरू यूनिवर्सिटी छात्र संघ चुनाव के लिए शुक्रवार को हुए मतदान में लगभग 73 प्रतिशत मतदान हुआ।

**नई दिल्ली।** जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में चार वर्ष बाद हुए छात्र संघ चुनावों में एक बार फिर लाल झंडा फहराया है। लेफ्ट के संयुक्त गठबंधन ने अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, सचिव और संयुक्त सचिव की चारों सीटों पर कब्जा जमा लिया है।

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (एबीवीपी) खूब कोशिशों के बावजूद एक भी सीट हासिल नहीं कर सकी। अध्यक्ष पद पर आल इंडिया स्टूडेंट्स एसोसिएशन (आइसा) के धनंजय ने कब्जा जमाया है।

अध्यक्ष पद पर जीते धनंजय और सचिव प्रियांशी आर्य।

उपाध्यक्ष अभिजीत घोष और संयुक्त सचिव मोहम्मद साजिद

10 वर्षों में सर्वाधिक 73 प्रतिशत मतदान

उपाध्यक्ष पद पर स्टूडेंट फेडरेशन आफ इंडिया (एसएफआइ) के अविजीत घोष ने, सचिव पद पर बिरसा आंबेडकर फुले स्टूडेंट्स एसोसिएशन (बापसा) की प्रियांशी आर्या और संयुक्त सचिव पद पर आल इंडिया स्टूडेंट्स फेडरेशन (AISF) के मोहम्मद साजिद ने जीत हासिल की है।

शुक्रवार को मतदान हुआ था और 7751 मतदाताओं में से 5656 ने मतदान किया था। 10 वर्षों में सर्वाधिक 73 प्रतिशत मतदान हुआ था।

अध्यक्ष पद पर आठ प्रत्याशी मैदान में थे। इनमें मुख्य मुकाबला संयुक्त लेफ्ट गठबंधन और एबीवीपी के बीच था। अध्यक्ष पद पर धनंजय को 2598 वोट हासिल हुए। एबीवीपी की तरफ से उमेश चंद्र अजमीरा को उतारा गया था। उन्हें 1676 वोट हासिल हुए। धनंजय ने उमेश को 922 वोटों से शिकस्त दी।

उपाध्यक्ष पद पर गठबंधन के अविजीत घोष ने एबीवीपी की दीपिका शर्मा को 927 वोट से हराया। अविजीत को 2409 और दीपिका को 1482 वोट हासिल हुए।सचिव पद पर लेफ्ट गठबंधन की प्रत्याशी स्वाति सिंह का नामांकन रद होने के बाद उन्होंने बापसा को समर्थन दे दिया था।

बापसा की प्रियांशी आर्या ने सर्वाधिक वोट हासिल किए। उन्हें 2887 वोट मिले। उन्होंने एबीवीपी के अर्जुन आनंद को 926 वोट से हराया।अर्जुन को 1961 वोट मिले। संयुक्त सचिव पद पर एबीवीपी ने अच्छी लड़ाई लड़ी। उनके प्रत्याशी गोविंद दांगी को सभी एबीवीपी के प्रत्याशियों में सर्वाधिक 2066 वोट हासिल हुए, लेकिन वे AISF के मोहम्मद साजिद को हरा नहीं सके। मोहम्मद साजिद को 2574 वोट हासिल हुए। साजिद ने गोविंद को 508 वोटों से हराया।

**एबीवीपी ने 2000 में जमाया था अध्यक्ष पद पर कब्जा**

दूसरे संगठनों के प्रत्याशी कुछ खास कमाल नहीं दिखा सके। उनमें से कोई हजार वोट भी हासिल नहीं कर सका। रविवार सुबह से स्कूलों के अनुसार हुई मतगणना में अंतिम परिणामों की घोषणा चुनाव समिति के अध्यक्ष शैलेंद्र कुमार ने की।

बता दें कि एबीवीपी ने 2000 में एक ही बार अध्यक्ष पद पर कब्जा जमाया है। तब से 24 साल बीत चुके हैं, लेकिन एबीवीपी अध्यक्ष पद नहीं जीत सकी है। संयुक्त सचिव पर 2015-16 के छात्र संघ चुनाव में एबीवीपी ने अपनी जगह बनाई थी। तब सौरभ शर्मा ने आइसा के उम्मीदवार को केवल 28 मतों से पराजित कर जीत दर्ज की थी।

**2016 से बन रहा है गठबंधन**

एबीवीपी की 2015 में संयुक्त सचिव पद पर जीत के बाद 2016 से वाम छात्र संगठन गठबंधन बनाकर चुनाव लड़ रहे हैं। इसमें लगातार जीत हासिल करते आ रहे हैं।

गठबंधन में आइसा, एसफआइ, डीएसफ और एआइएसएफ शामिल हैं। 2019 में एसएफआइ की ओर से आइशी घोष ने अध्यक्ष पद का चुनाव जीता था। फिर कोरोना महामारी आ गई और चार वर्ष तक चुनाव नहीं हो सके।

# सीरवी समाज सूरत भवन में होली घुलेटी के उपलक्ष मे भव्य आयोजन हुआ, फाल्गुनी रंगों में दिखी होली की उमंग

परिवहन विशेष न्यूज

**सूरतः** सीरवी समाज गुजरात (सूरत) आई माता रोड़ पर्वत पटिया समाज भवन में आज रविवार को होली दहन किया गया। संस्था के सचिव भंवरलाल भायल ने समाज बंधुओ को होली और घूलेटी की हार्दिक शुभकामनाएं दी और सभी का स्वागत किया और 50 पुत्र व पुत्री प्राप्ति पर माता पिताओं को उज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाए दी । गेर मंडल द्वारा 50 बच्चों का ढूंढ कार्यक्रम किया गया। गेर नृत्य कलाकारों ने पारंपरिक वेशभूषा धारण कर पावों में बंधे घुंघरू की झंकार पर तथा चंग की थाप पर राजस्थानी लोक कला व संस्कृति को दर्शाते हुए फागण के गीत गाते हुए नृत्य किया। महिलाओं ने भी समूह में गेर नृत्य की प्रस्तुति दी। एक दूसरे को गुलाल लगाकर होली खेली। इस मौके पर उप सचिव संजय राठौड़ ने होली घूलेटी की महत्वता की जानकारी दी और सभी को बढ़ चढ़कर भाग लेने के लिए आभार व्यक्त किया। इस शानदार आयोजन के लिए अध्यक्ष हेमाराम पंवार ने गैर मण्डल महिला मण्डल कार्यकारिणी सदस्य और समाज बंधुओ का धन्यवाद अर्पित किया। इस अवसर पर संस्था के पूर्व पदाधिकारीगण एवं कार्यकारिणी सदस्य, स्पोर्ट्स क्लब सदस्य, महिला मंडल, गेर मंडल, नवयुवक मंडल के सभी सदस्य उपस्थित रहे।

# पैरों में घुंघरू और सिर पर रंग-बिरंगी पगड़ी, भारत का एक ऐसा राज्य; जहां होली में सिर्फ पुरुष करते हैं नाच

होली का त्योहार राजस्थान के कई क्षेत्रों में अलग तरीके से मनाया जाता है। मगर राजस्थान के मारवाड़ क्षेत्र में होली मनाने का अलग ही अंदाज दिखता है जिसकी वजह से यह क्षेत्र काफी प्रसिद्ध भी माना जाता है। राजस्थान के मारवाड़ क्षेत्र में होली के दौरान चंग की थाप पर नाचना होता है। होली के दिन इसी चंग की थाप पर लोग नाचते और झूमते नजर आते हैं।

**नई दिल्ली।** भारत में हर एक त्योहार बड़ी ही धूम-धाम से मनाया जाता है। वहीं सभी त्योहारों में से होली और दिवाली मुख्य त्योहारों में से एक माना जाता है। यह दोनों ही पर्व भारत के मुख्य पर्व तो हैं लेकिन इन दोनों ही त्योहार को मनाने का तरीका भारत के हर राज्य का अपना एक अलग अंदाज होता है। उसी में से एक होली है। होली को रंगों का ऐसा त्योहार मानते हैं जो सबसे ज्यादा मज़ेदार और उत्साहपूर्ण त्योहार में से एक है। यह एक ऐसा अवसर होता है जो पूरी तरह से आनंद और उल्लास, मौज-मस्ती और खेल, संगीत और नृत्य और निश्चित रूप से ढेर सारे चमकीले रंग हम सबके जीवन में लाता है।

जैसा कि मैंने आपको बताया कि भारत में हर त्योहार को हर राज्य में अलग-अलग नाम और अलग-अलग तरीके से मनाते हैं। यह अलग तरीके से मनाने का रिवाज सिर्फ राज्यों तक सीमित नहीं होता राज्यों में अलग-अलग क्षेत्र होते हैं और सभी क्षेत्रों का भी अपना एक विशेष तरीका होता है सभी त्योहार को अलग अंदाज में मनाने का और उसके साथ जुड़ी होती हैं कई मान्यताएं।

**ऐसी होती है राजस्थान के मारवाड़ की होली**

इसी तरह होली का त्योहार भी राजस्थान के कई क्षेत्रों में अलग तरीके से मनाया जाता है। मगर राजस्थान के मारवाड़ क्षेत्र में होली मनाने का अलग ही अंदाज दिखता है जिसकी वजह से यह क्षेत्र काफी प्रसिद्ध भी माना जाता है। राजस्थान के मारवाड़ क्षेत्र में होली के विविध रंग देखने को मिलते हैं। इस क्षेत्र की लोक परम्पराएं, फाल्गुन मास के गीत और चंग की थाप अपना अलग ही महत्व रखते हैं। जैसे बहुत राज्यों में ढोल हर खुशी के समय का इजहार करने के लिए होते हैं। उसी तरह राजस्थान के मारवाड़ क्षेत्र में होली के दौरान चंग की थाप पर नाचना होता है। ग्रामीण इलाकों में होली के दिन इसी चंग की थाप पर लोग नाचते और झूमते नजर आते हैं।

**चंग की थाप पर नाच को कहा जाता है गैर नृत्य**

जब चंग कि थाप बजती है तो ग्रामीण अंचलों के लोग एक-दूसरे के साथ फाग गीत गाते है। चंग की थाप के साथ गीत गाते हुए कदम से कदम मिलाकर सभी एकसाथ नृत्य करते हैं कि, ऐसा नजारा शहरों में ढोल पर नाचने वालों में नहीं देखा जाता है।

**कैसे होता है गैर नृत्य**

जब होली के दिन मारवाड़ क्षेत्र के पुरुष गोल घेरे में एक दूसरे के साथ नृत्य करते हैं, वह गैर नृत्य कहलाता है। वहीं जो गैर नृत्य करने वाले होते हैं उनको गैरीया कहा जाता है। इस नृत्य को करने का एक पोशाक होता है। जिसमें सफेद धोती, सिर पर लाल, गुलाबी, सफेद अंगरखी, केसरिया रंगबी रंगी की पगड़ी पहनते हैं। इसके अलावा यह नृत्य इसलिए भी विशेष होता है क्योंकि इस नृत्य में पुरुष अपने पैरों में घुंघरू बांधकर यह 'गैर' नृत्य करते हैं। यह नृत्य अपनी विशेषता इसलिए रखता है क्योंकि यह नृत्य केवल पुरुषों के द्वारा किया जाता हैं।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023